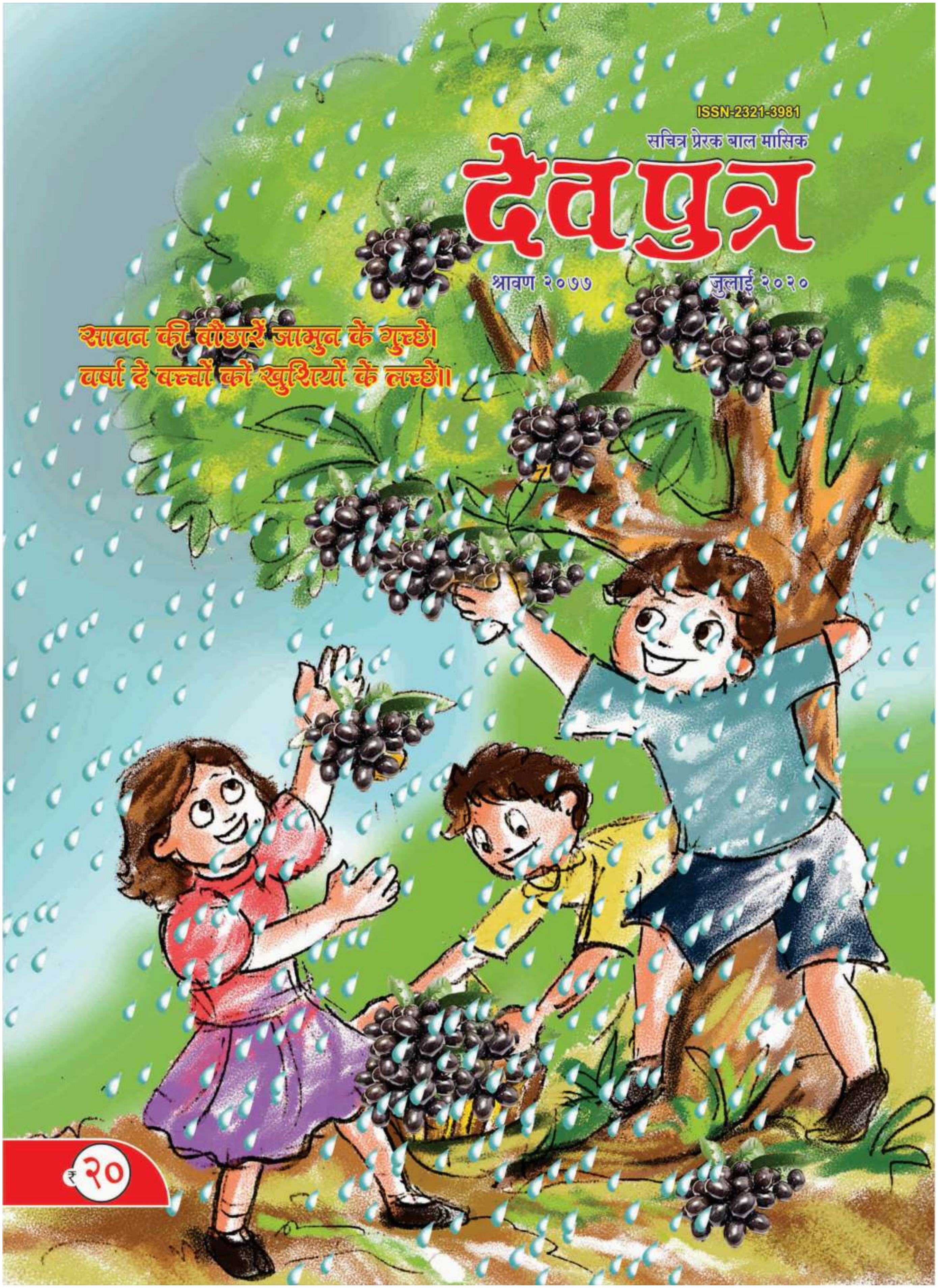
ISSN-2321-3981
सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र
श्रावण २०७७
जुलाई २०२०
सावन की बौछारें जामुन के गुच्छे।
वर्षा दे बच्चों को खुशियों के लच्छे।।
₹ २०

विद्याभारती के गौरव

चीनियों को धूल चटाकर बलिदान हुए कर्नल संतोष बाबू

बाल्यकाल में आंध्र प्रदेश के लक्सेट्टीपेटा गाँव के सरस्वती शिशु मंदिर में अपने सहपाठियों के साथ...

तैलंगाना। १५, १६ जून २०२० की मध्य रात्रि को पूर्वी लद्दाख की गलवान घाटी में चीनी सैनिकों से आमने सामने मुठभेड़ में अपनी भारतीय सीमा की रक्षा करते हुए लगभग पचास चीनी सैनिकों को धूल चटाते हुए कर्नल संतोष बाबू अपने १९ रणबाकुंरे सैनिकों के साथ मातृभूमि पर जीवन न्यौछावर कर गए।

हमें अपने इन सभी वीर सेनानियों पर अत्यंत गर्व है और इनके बलिदान को हम कृतज्ञ भारतवासी कभी भी नहीं भूलेंगे। लेकिन इस बलिदान गाथा का एक बिन्दु ऐसा भी है जो हम विद्या भारती के कार्यकर्त्ताओं के लिए अत्यंत गौरव और हमारे भैया–बहिनों के लिए विशेष प्रेरणा व ऊर्जा भरता है। वह यह कि अमर बलिदानी कर्नल संतोष बाबू की प्राथमिक शिक्षा अपने विद्या भारती के विद्यालय में ही हुई। वर्तमान तैलंगाना पूर्व में आन्ध्रप्रदेश के लक्सेट्टीपेटा नामक गाँव के सरस्वती विद्या मंदिर में कक्षा ४ तक पढ़ते हुए ही उन्होंने देशभक्ति का पहला पाठ भी पढ़ा था और पांचवी कक्षा से वे कोरूकोंडा सैनिक स्कूल में अध्ययन कर सीधे भारतीय सेना में भर्ती हो गए। यह स्थान तैलंगाना के मचिर्यालि जिले में है। १६ बिहार रेजीमेंट के कर्नल संतोष बाबू पिछले डेढ वर्ष से भारत–चीन सीमा पर तैनात थे। उल्लेखनीय है कि ४५ वर्ष बाद यह अवसर था जब चीनी आक्रमण में कोई सैनिक बलिदान हुआ। लेकिन विश्वासघात पूर्वक हुए इस आक्रमण को इन देशाभिमानी २० वीरों ने दुश्मन को लगभग दोगुनी क्षति पहुँचा कर अपनी सीमा में खदेड़ दिया।

मातृभूमि की सेवा में अपने प्राण न्यौछावर करने वाले वीर सपूतों को विनम्र श्रद्धाजंलि...

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

श्रावण	२०७६	■ वर्ष ४१
जुलाई	२०२०	■ अंक १

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

पिछले दिनों दूरदर्शन पर और समाचार पत्रों में उ.प्र. के नन्हें विद्वान बालक पं. आशुतोष दुबे से जुड़े समाचार आपने भी देखे-पढ़े होंगे।

भैया आशुतोष इस समय मात्र ९ वर्ष के हैं। हम सब सोचें ९ वर्ष की अवस्था अर्थात् क्या? जबकि अन्य सामान्य बच्चे विद्यालय जाने के नाम से रोने लगते हैं। गृहकार्य को बोझ और परीक्षा को तो दण्ड मानते हैं। खेलने कूदने से थोड़ा बहुत समय बच जाए तो लगता है अब टी.वी. देखने का समय ही कम पड़ गया है। टी.वी. देखकर निबट भी जाएं तो माँ, पिताजी के मोबाईल में थोड़ी देर गेम खेलकर बचा हुआ समय खपा देते हैं।

किन्तु जिन भैया आशुतोष की बात मैं कर रहा हूँ उन्होंने इस तरह का कोई शौक नहीं पाला। वे लग गए लिखने-पढ़ने और स्वाध्याय में। आप सबको जानकर आश्चर्य होगा कि ९ वर्ष के इस नन्हें पण्डित ने संस्कृत विषय में रुचि लेकर उसके बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ डाले। उनकी मेधा और बुद्धि संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन से इतनी प्रखर होती चली गई कि उन्होंने चारों वेद कण्ठस्थ कर लिए। उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी ने स्वयं बुलाकर भैया आशुतोष का मानवंदन किया।

बच्चो! हम कल्पना कर सकते हैं जिन वेदों को मात्र पढ़ लेने वाले लोग अपने को प्रकाण्ड विद्वान कहने लगते हैं, उन्हें कण्ठस्थ कर लेना कितनी बड़ी उपलब्धि है? आप सब भी प्रण लें कि संस्कृत के प्रति अपने मन में श्रद्धा पैदा करें। यह भाषा हमें हमारी परम्परा से जोड़ती है। विद्यालयों में भाषा के विकल्प में संस्कृत छोड़कर फ्रेंच , अंग्रेजी और चीनी भाषा (मंदारिन) सिखकर गर्व करने वाले बच्चों को शायद आशुतोष प्रेरणा देंगे। हम अपनी भाषा का सम्मान करें तो निश्चय ही अन्य भाषाओं के प्रति हमारा मन स्वत: श्रद्धावान हो जाएगा। अन्यथा मराठी भाषा में एक कहावत कही जाती है ना कि- ''जो अपनी माता को माता नहीं कह सकता वह पड़ोसी की माता को मौसी कब कहेगा?''

आइए हम सब भी संस्कृत पढ़कर गौरव की अनुभूति करें।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- नीमड़ी ब्रिगेड़ - डॉ. सत्यनारायण 'सत्य' ०५
- नाचने वाला बंदर - प्राजक्ता देशपाण्डे १०
- उत्सव और प्रेम - सीमा जैन 'भारत' १२
- खुशियों वाला जन्मदिन - अनुपमा 'अनुश्री' २१
- एक अनोखी यात्रा - विजय जी. वलेरा २६
- उधमी अमर - नीरज त्यागी ३२
- लड्डू - डॉ. शशि गोयल ३५
- परी कथा सी - पवित्रा अग्रवाल ३७
- दाने दाने की एक... - समीर गांगुली ४४

कविता

- घपलम छपलम - राजेन्द्र निशेश ०९
- एकोपयोगी प्लास्टिक - सुखदेव प्रधान १४
- गुरु महिमा - श्यान झंवर १५
- भक्ति जगा दो - श्याम निगम ३३
- मेला का - भानुप्रताप सिंह ४६
- बन्दर मामा का... - डॉ. वेदमित्र शुक्ल ४९
- खुशियों की लड़ी - रावेन्द्र कुमार 'रवि' ५०

बाल प्रस्तुति

- सावन आया विकास शर्मा ११

बाल प्रतिभा

- रूबल जैन - २०

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - १५
- सचित्र विज्ञान वार्ता - १६
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे १८
- आपकी पाती - २२
- हमारे राज्य वृक्ष - डॉ. परशुराम शुक्ल २३
- विषय एक कल्पना अनेक :
  - कीर्ति श्रीवास्तव २४
  - सुरेशचन्द्र सर्वहारा २४
  - आर.पी. मिश्रा २५
- स्वयं बनें वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी ३०
- छः अंगुल मुस्कान - विष्णप्रसाद चौहान ३८
- पुस्तक परिचय - ४०
- यह देश है वीर जवानों का - ४१
- गाथा वीर शिवाजी की - ४२
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ४३

चित्रकथा

- छोटी-छोटी बातें - देवांशु वत्स ३१
- वायलीन की कमाई - देवांशु वत्स ३९
- एक ही बात - संकेत गोस्वामी ४७

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189** **चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - ''**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**'' आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

नीमड़ी ब्रिगेड

कहानी

डॉ. सत्यनारायण 'सत्य'

गरमी की छुट्टियाँ हो चुकी थी। अब डेढ़ महीने तक मौज ही मौज, ना याद करने की ना ही गृहकार्य की चिन्ता। सभी स्कूली बच्चों की तरह काव्या को भी सालभर की पढ़ाई, प्रथम, द्वितीय, तृतीय टेस्ट और अर्द्धवार्षिक-वार्षिक परीक्षा के बाद एक मनभावन शान्ति का अहसास हो रहा है। काव्या, दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली एक होनहार छात्रा, जो जयपुर के आदर्श विद्या मंदिर में पढ़ रही थी। उसके पिता विधानसभा सचिवालय में प्रशासनिक अधिकारी थे। माता-पिता की लाड़ली। कक्षा नौ तक मेधावी छात्रा की तरह सारी परीक्षाएँ अच्छे उत्तीर्णांकों से उत्तीर्ण करना इसका शौक ही नहीं, अब आदत बन चुकी थी। परीक्षा में अच्छे अंक तो प्राप्त करना ही, नृत्य कला हो, कोई वाद-विवाद प्रतियोगिता हो, मेहंदी, रंगोली या फिर विज्ञान मेले जैसे आयोजन, यूं मानिये कि काव्या के बगैर उसकी कक्षा व विद्यालय का कोई कार्यक्रम हो ही नहीं पाता, जैसे-तैसे हो भी जाए तो उसे सफल नहीं माना जा सकता था। बस यही कारण कारण था कि काव्या अपने विद्यालय के सभी शिक्षकों और छात्र-छात्राओं की लाड़ली थी।

इस बार दसवीं कक्षा, माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से देनी थी, इसलिए पूरे वर्ष कठिन मेहनत कर, काव्या ने अपनी परीक्षा दी और गरमी की छुट्टियाँ मनाने, अपने ननिहाल के गाँव में आ गई। काव्या का ननिहाल, भीलवाड़ा जिले का एक छोटा सा गाँव रघुनाथपुरा है, जो प्रकृति की गोद में बसा एक प्यारा स्थान है। अपने नाना-नानी के साथ गाँव में रहना और सुबह-शाम को खूब घूमना-फिरना मौज करना, काव्या को पसंद आने लगा। कहाँ तो जयपुर जैसे महानगर में फ्लैट संस्कृति, उस पर एक या दो बी.एच.के. भवनों के भीतर अपनी गुजर बसर करना, कहाँ गाँवों में बड़ी-बड़ी चबूतरियाँ, भवन और खेत पर रहना, दोनों ही परिस्थितियों में जमीन आसमान का अंतर था। काव्या के पिता को तो प्रशासनिक एवं नौकरी की व्यस्तताओं के कारण छुट्टियाँ नहीं मिल पाती थी, पर काव्या ने अपनी माँ से जिद कर रघुनाथपुरा में गरमी की छुट्टियाँ बिताने की स्वीकृति ले ही ली।

काव्या के नाना जी, रघुनाथपुरा के जमींदार थे। साठ-सत्तर बीघा जमीन, दो-तीन अच्छे कुएं, जिनमें भरपूर पानी था, दस-बीस गाय-भैसों का तबेला और ठेठ गाँवों वाला वातावरण। एक अलग ही वातावरण में काव्या को बड़ा मजा आने लगा। धीरे-धीरे मोहल्ले की काली गोटी, फूली, नारायणी और सुगना जैसी लड़कियाँ काव्या की सहेली भी बन गई और अब मन लगने लग गया। सुबह-सुबह खेतों की सैर करना, गायों को पानी पिलाना, छाछ बिलोना, भैंसों को नहलाना, चारा काटना ये ऐसे काम थे, जिसमें काव्या को बड़ा अच्छा लगता। कुछ जिज्ञासा, कुछ रोचकता और कुछ शौक, यही वे कारण थे, कि गाँव में रचे बसे इन कामों को काव्या कभी खुद करने का प्रयास करती, तो कभी अपने नाना-नानी या मामा-मामी की मदद करने के बहाने इन्हें पूरा करती, तो पता ही नहीं चलता कि कब दिन से शाम हो गई।

एक दिन गायों को अपने मामाजी के साथ, खेत से लाकर घर पर बाँधा और खाना खाकर, चबूतरी के बाहर, मूंज वाली खाट पर बैठकर अपने नाना जी से बातें करने लगी। बातों ही बातों में एक बात पूछ ही बैठी- ''नाना जी! पिछले साल जब मैं गाँव आई थी, तब चौक के पास वाली

गली पर नीम के पेड़ों की जो पंक्तियाँ थी, अब वे कहाँ गई?
''बेटा, गाँव से एक सड़क निकालने के चक्कर में उन सभी नीम के पेड़ों की बलि देनी पड़ी। मुझे भी बहुत दुःख है, उस बात का। गाँव के प्यारा बा ने तो मुझे इस बात का खूब उलाहना दिया। उन्होंने तो मेरे घर के आगे अनशन भी करने का मन बना लिया था'' – नाना जी ने दुखी मन से कहा।

''हाँ, तो उन्होंने सही ही कहा था, आज ग्लोबल वार्मिंग की समस्या कितनी बढ़ती चली जा रही है। निरन्तर कम हो रहा पानी और सूखती हरियाली के कठिन दौर में हमें पेड़ों को बचाना ही चाहिए। अभी बाईस अप्रैल को हमारे विद्यालय में विज्ञान के शिक्षक ने पर्यावरण रक्षा और ग्लोबल वार्मिंग पर खूब अच्छा भाषण दिया था।'' – काव्या ने अपनी समझदारी भरी बात से नाना जी को समझाया तो नाना जी हामी भरते हुए गदरन हिलाते रहे।

वैसे काव्या के नाना जी उस जमाने के दसवीं कक्षा तक पढ़े–लिखे इंसान थे, गाँव में खूब मान सम्मान था, और दो बार गाँव के सरपंच रह चुके थे, और अभी भी लोग उन्हें मुखिया का ही सम्मान देते थे।

''बेटे! ये बात तुमने अभी जो बोली है ना, ग्लोबल वार्मिंग, आखिर यह है क्या, आज कल मैं इस शब्द को टी.वी. व अखबारों में खूब देख पढ़ रहा हूँ?'' नाना जी ने जिज्ञासा भरी आँखों से देखते हुए काव्या से प्रश्न किया।

''नाना जी! आप देख रहे हैं ना, धरती पर गरमी कितनी ज्यादा बढ़ गई है। आपके जमाने में खूब बारिश होती थी, मौसम सुहाना व गरमी भी ठीक ठाक ही पड़ती थी। आज के दौर में कटते पेड़ और पर्यावरण के प्रदूषण की वजह से यह धरती, लगातार गर्म, और गर्म होती जा रही है, बस इस बढ़ते तापमान को ही वैज्ञानिक लोग, ग्लोबल वार्मिंग कहते हैं।'' काव्या के इस सारगर्भित उत्तर से नाना जी की आँखें चमक उठी।

लेकिन तभी, नाना जी ने जिन प्यारा बा का नाम लिया था, काव्या उनके बारे में पूछ ही बैठी– ''नानाजी! अभी, आप प्यारा बा के बारे में कह रहे थे, ये कौन हैं, और इनका क्या काम है, जो आप बार–बार इनका नाम लेते रहते हैं। कल खेतों की तरफ जाते हुए भी कमली काकी कह रही थी कि ये बडला प्यारा बा ने ही लगाया है।''

''कोई बात नहीं बेटी! कल हम प्यारा बा से मिलेंगे।'' नाना जी ने आश्वस्त किया, और सब घर वाले खाना खाकर, चौक में ही खाट लगाकर खुले आसमान के नीचे सो गए। गाँवों में डोरी वाली खाट पर खुले आसमान के नीचे, तारों को देखते हुए ही सोने का रिवाज है, और एक अलग सा आनन्द भी। जयपुर जैसे महानगरों में भला ऐसा सुख कहाँ। वहाँ तो पंखे, कूलर या एसी की बनावटी हवा और बंद कमरों में गरमी से जूझते रात निकालनी होती है, जबकि गाँवों में अब भी गर्मियों में खुले चौक या छतों पर खुली हवा में सोने का अलग ही मजा होता है।

खैर, सुबह होते ही, नहा धोकर व चाय–

नाश्ता कर काव्या अखबार पढ़ने बैठी ही थी, तभी नाना जी की आवाज ने उसे रात की बात याद दिला दी, वही प्यारा बा से मिलने की। ''बेटा! चलो, खेतों की तरफ घूमने चलते हैं, वहीं कहीं प्यारा बा मिल ही जायेंगे।''

''जी नानू! आई।'' और ऐसा कहकर काव्या झटपट चल पड़ी अपने नानाजी के साथ। रास्ते में चलते चलते नाना जी बतलाते जा रहे थे ''बेटी! ये प्यारा बा, पिछले तीस सालों से गाँव में पेड़ लगा रहे हैं। गाँव के बाहर जो भैरू जी का मंदिर है, बंक्या राणी माता का मंदिर, चौराहा, तालाब की पाल, खेल के मैदान के पास, भूरा चौक, जाने कहाँ-कहाँ, ये आदमी, बिना रुके, बिना थके, अकेला

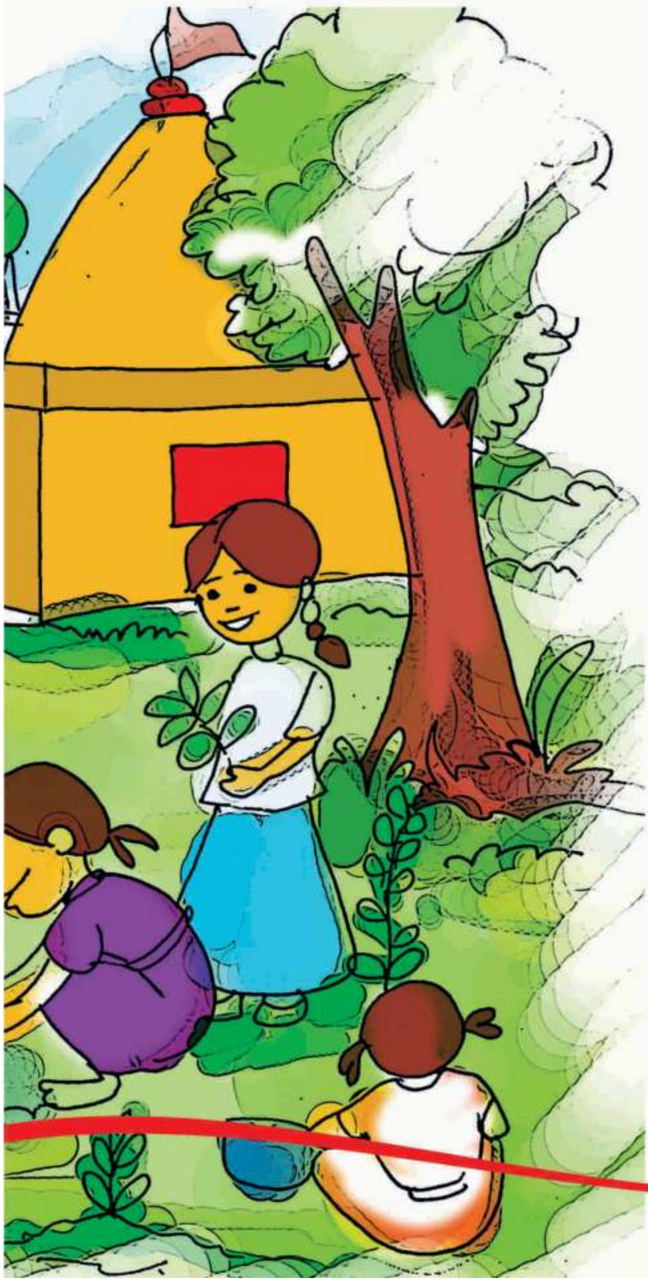

अपने कंधे पर कुल्हाड़ी, गेती-फावड़ा और पानी का छोटा ड्रम लटकाए पेड़ों की सेवा में सुबह-शाम निकल पड़ता है। बिना किसी लोभ, प्रचार और प्रशंसा के इस आदमी का पर्यावरण प्रेम लाजवाब है।'' नाना जी समझाते जा रहे थे, बताते जा रहे थे।

तभी दूर के चौराहे पर प्यारा बा, उसी बताए हुलिए के अनुसार एक बरगद के छोटे पेड़ के चारों और कांटों की बाड़नुमा ट्री गार्ड बनाते हुए नजर आ गए। काव्या राजी हो गई। थोड़ा तेज चलती हुई, कुछ दौड़कर वह झट से प्यारा बा के पास पहुँची, उनके पैर छुए और कह पड़ी- ''बा सा, आप तो बहुत भलाई का काम कर रहे हो, ये कैसा शौक चढ़ गया आपको?''

''बेटी! तुमको गाँव में कभी देखा नहीं, कौन हो तुम?'' जब प्यारा बा ने पूछा तो पास आए नाना जी ने काव्या का पूरा परिचय देते हुए सारी बात बतला दी।''

प्यारा बा बोल पड़े- ''बेटी! जब पच्चीस, तीस बरस पूर्व, जगदीश भगवान के मंदिर पर दर्शन करने जा रहा था, तो गरमी के मारे एक पेड़ की छाँव ढूंढने लगा। जब एक खेजड़ी की छाँव में सुस्ता रहा था, तभी एक गडरिये ने ताना मारा, ''भाई! छाँव का तो तुम्हें बड़ा शौक है, पर कभी कोई पेड़ भी लगाया कि नहीं इस सूखी धरती पर?''

बस तभी से मेरे मन को वो बात चुभ गई। पिछले तीस सालों से गाँव के हर चौक, चौराहे, देव स्थान पर सैंकड़ों पौधे लगा चुका हूँ, कई कई तो बड़े भारी-भरकम पेड़ बन चुके हैं। कुछ को बच्चों की तरह रोज खाद-पानी दे देकर बड़ा कर रहा हूँ।'' प्यारा बा संतोषभरी श्वास लेकर बोले।

''तो क्या आप भी, ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण प्रदूषण की समस्या के कारण चिंतित हैं।''

काव्या ने कहा, तो प्यारा बा हँस पड़े ''बेटी, ऐसी कोई बात मुझे तो समझ आती नहीं है, हाँ, यह जरूर है कि पेड़ हमारी धरती का शृंगार है। कई-कई जीव-जिनावर, पंछी, कीड़े-मकौड़े, गिलहरियाँ और पशु-मनुष्य सब छाया हवा के लिए पेड़ों की ही शरण लेते है। ऐसे में अपने हाथ से कोई भला काम हो जाए, तो क्या बुरा है।''

''जी, बा सा, बहुत सही कहा आपने। पर हमारे शहरों

में तो कोई एक पौधा भी लगाता है, तो कई–कई अखबार वालों को बुला कर, फोटो खींचते हुए, माला पहनकर पौधा लगाता है, फिर भले ही वह चार महिने में सूख जाए, मर जाए, पर आप तो गुमनाम, यह काम करते चले जा रहे है, कैसा लगता हैं?'' काव्या ने पूछा।

प्यारा बा, संतोष भरी मुस्कान के साथ बोले, ''बेटा, बस अच्छा लगता है, इसी बहाने, धरती माता की कुछ सेवा कर लेते हैं।''

''ठीक है, बा सा! कल से हम सब भी आपके साथ कुछ अच्छा करने का प्यास करेंगे, आपकी मदद करेंगे।''

अगले दिन काव्या ने अपने ननिहाल की कुछ सहेलियों को साथ लिया और कहा– ''देखो सहेलियो! पिछले कई सालों से रघुनाथपुरा में प्यारा बा आपके आस–पास कई पौधे लगा चुके हैं। यह व्यक्ति निस्वार्थ भाव से पर्यावरण संरक्षण और हरियाली बढ़ाने के क्षेत्र में अकेला और गुमनाम ढंग से काम कर रहा है। मेरा तो सिर्फ ननिहाल है, और मैं तो गरमी की छुट्टियाँ खत्म होते ही, वापस जयपुर चली जाऊँगी। अगर तुम सब चाहो, तो हम कुछ काम करें, प्यारा बा की मदद तो हो ही जाएगी, पर्यावरण संरक्षण के रूप में भी इस गाँव का भला हो जाएगा।'' काव्या ने सुझाव दिया।

भगवानी बोल पड़ी– ''हाँ, हाँ बहना! बताओ तुम तो हम क्या कर सकते हैं, और कैसे कर सकते हैं?''

''आज हम एक टीम बना रहे है, नीमड़ी ब्रिगेड।'' चेतना, भगवानी, नारायणी, कमली, छगनी, सीता, राधा और काव्या, बस मोहल्ले की लड़कियाँ मिली और बन गई 'निमड़ी ब्रिगेड' प्यारा बा से मिली। कुछ लड़कियों ने जिम्मा लिया। दो–दो पौधे लगाने का, बिलकुल नये और उन्हें पूरे साल भर संभालने का। कुछ लड़कियों ने जिम्मा लिया, प्यारा बा के लगाए हुए पेड़–पौधे की संभाल करने का। प्यारा बा भी राजी हो गए, पूरी तीस बरस बाद कोई साथ देने वाला मिला था। 'निमड़ी ब्रिगेड' धीमे–धीमे पूरे रघुनाथपुरा में प्रसिद्ध हो गई। एक ही गाँव में पाँच–छह सौ पौधे तो प्यारा बा लगा ही चुके थे। इस 'नीमड़ी ब्रिगेड' ने गाँव के चौराहों पर, खेत की मेड़ पर, भैरू जी के देवरे, मामा देव, तेजाजी, स्कूल का मैदान, तालाब की पाल, सती माता, जूंझार जी, लगभग हर एक आम और खास स्थान पर नीम, पीपल, बरगद, जामुन, करंज और बहुत ही किस्म के पौधे लगाने शुरु कर दिए। धीमे–धीमे पूरा गाँव हरियाली से लक–दक नजर आने लगा।

हरियाली अमावस्या आई आज काव्या फिर अपने गाँव आई थी निमड़ी ब्रिगेड ने प्यारा बा का सम्मान करने का मन बनाया। गाँव के चौक पर सभी ग्रामवासियों को इकट्ठा किया और साफा व माला पहना कर काव्या ने अपने नाना जी के माध्यम से प्यारा बा का सम्मान किया। प्यारा बा की आँखें खुशी के आँसूओं से भीग गई। वे बोल पड़े– ''जमींदार जी, मेरा मान सम्मान मत कीजिए। रघुनाथपुरा हम सबका अपना गाँव है। मैं तो पिछले बीस–तीस सालों से पौधे लगा ही रहा हूँ, पर दो महीने के लिए गाँव आई, ये काव्या बिटिया, वही अपनी रेखा की छोरी, हम सबको कितना कुछ सिखा गई है। मैं अपना साफा, इस काव्या बेटी को भेंट करता हूँ।'' कह कर प्यारा बा ने अपना पहनाया हुआ साफा, काव्या के माथे पर धर दिया। नीमड़ी ब्रिगेड की सारी लड़कियाँ और एकत्रित ग्रामवासियों ने ताली बजाकर प्रसन्नता व्यक्त की।

काव्या बोल पड़ी ''मैं तो चली जाऊँगी, पर प्यारा बा सा ने पर्यावरण संरक्षण के रूप में अधिकाधिक पौधारोपण की जो प्रेरणा हमारे मन में जाग्रत की है, उसकी सहायता से हमने अपनी सहेलियों के साथ एक अभियान चलाया है, गाँव को अधिक से अधिक हरा–भरा बनाने का। आप सबसे हाथ जोड़ कर निवेदन है कि आप यह अभियान आगे से आगे बढ़ाते रहें। मैं मेरे पिताजी, जो कि जयपुर राज्य सचिवालय में काम करते हैं, अगले स्वतंत्रता दिवस पर जयपुर या भीलवाड़ा जिला स्तर पर प्यारा बा को सम्मानित करने के लिए उन्हे कहूँगी।'' सबने ताली बजाकर स्वागत किया, इस प्रस्ताव का।

रघुनाथपुरा वाले फिर गाने लगे –
''धरती माँ हम सबकी माता,
आओ इसको हरा चुनर ओढाएँ...''

• रायपुर, भीलवाड़ा (राज.)

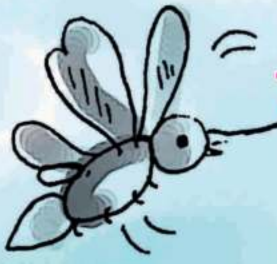

घपलम-छपलम

कविता

राजेन्द्र निशेश

घपलम-छपलम ने मिलजुल कर
ऐसी बीन बजाई
हाथी ने चिंघाड़ लगाई
भैंस खड़ी शरमाई!

घपलम-छपलम ने मिलजुल कर
ऐसा ढोल बजाया
गधेराज ने राग अलापा
बेसुर कौवा गाया!

घपलम-छपलम ने मिलजुल कर
ऐसी तान लगाई
बन्दर जी ने छत से आकर
खिल्ली खूब उड़ाई!

घपलम-छपलम ने मिलजुल कर
ऐसी खीर बनाई
बिन मीठे के खीर बनी है
चुहिया झट चिल्लाई!

घपलम-छपलम ने मिलजुल कर
ऐसा मारा छक्का
गेंद उड़ गई आसमान में
मच्छर हक्का-बक्का!

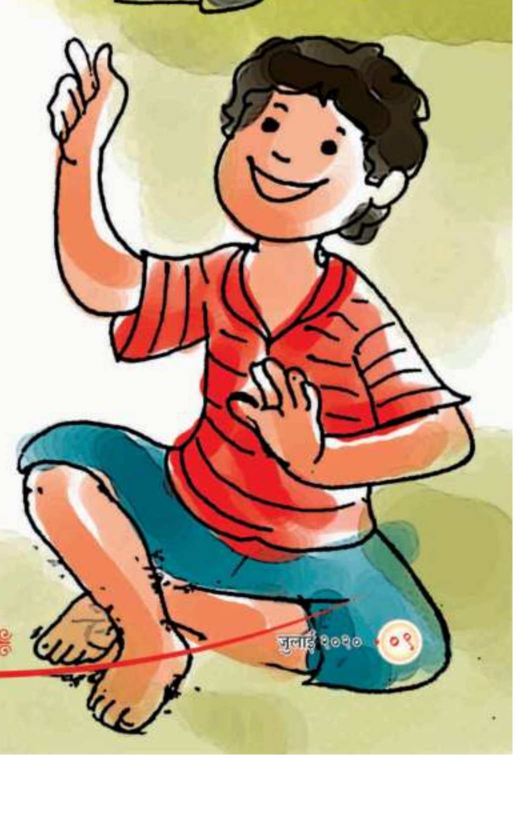

घपलम-छपलम ने मिलजुल कर
अपना समय गँवाया
गया समय फिर लौट न आता
नानी ने समझाया!

• चण्डीगढ़

नाचने वाला बंदर

कहानी

प्राजक्ता देशपाण्डे

कक्षा नवीं की छात्रा काव्या पढ़ने–लिखने के साथ–साथ विद्यालय की कई गतिविधियों में बढ़चढ़ कर भाग लेती थी खेलकूद, विज्ञान प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में वह हमेशा आगे रहती और पुरस्कर जीता करती। उसकी प्रगति देख उसके साथी उससे ईर्ष्या भाव रखते थे, किसी न किसी बहाने से उसे नीचा दिखाने का अवसर खोजते रहते। एक बार परीक्षा के दौरान उनके विज्ञान शिक्षक ने पढ़ाई से संबधित महत्वपूर्ण जानकारी विद्यार्थियों को भेजने के लिए उनके व्हाट्सएप नंबर मांगे। काव्या के पास अपना फोन तो था नहीं, सो उसने अपनी माँ का नंबर दिया। बस इसी बात पर उसके साथियों ने पिछड़ेपन को लेकर उसका उपहास करना आरंभ कर दिया। कुछ दिनों तक काव्या ने उनकी बातों को अनसुना किया लेकिन मन ही मन वह यह मान बैठी की स्मार्ट फोन के बगैर सच में सबसे पिछड़ गयी है। अब तो आए दिन वह घर में माता–पिता से स्मार्ट फोन खरीदने की जिद करने लगी। माँ ने समझाया– ''बेटा, अभी तुम्हें इसकी उतनी आवश्यकता नहीं है, दूसरों की देखादेखी करना ठीक नहीं है।'' लेकिन काव्या पर तो मानो भूत सवार था, बेटी का मन रखने के लिए हारकर पिताजी ने उसके जन्मदिन पर उसे फोन दिलवा दिया।

अपने नए फोन को लेकर काव्या खासी उत्साहित थी कभी वह सेल्फी खींच दोस्तों को पोस्ट करती तो कभी कानों में ईयरफोन लगा कर गाने सुनती फिरती या घंटो गेम खेलने में समय बर्बाद करती। परिणामतः, उसकी दिनचर्या और स्वास्थ्य बिगड़ने लगा, माता–पिता के मना करने या फोन ले लेने पर वह बौखला उठती धीरे–धीरे पढ़ाई के साथ वह अन्य गतिविधियों में दिन प्रतिदिन पिछड़ने लगी। समय पर गृहकार्य पूरा न कर पाने से विद्यालय में उसे शिक्षकों की डांट खानी पड़ती, उसे दुःख तो होता लेकिन चाहकर भी वह अपनी आदत से मजबूर हो चली थी। एक दिन विद्यालय से लौटकर उसने देखा की गाँव से उसकी नानी सबके साथ नये वर्ष के स्वागत के लिए आई हुई है। काव्या से मिलने पर वह उन्हें कुछ खोयी–खोयी सी लगी, हमेशा की तरह वह काव्या के कमरे में ही रुकी, उन्होंने देखा अपनी हर छोटी बड़ी बात उनसे साझा करने वाली उनकी नाती अब सिर्फ अपने फोन से चिपकी रहती हैं। पढ़ाई से भी उसका ध्यान भटक गया हैं, नानी को सारा माजरा समझ आ गया। एक रात भोजन करने के बाद उन्होंने उसे अपने पास बुलाकर प्यार से पूछा,– ''बेटा, अबकी बार तो तुमने

मुझे विद्यालय से जुड़ी कोई भी बात नहीं बताईं। हाँ, इस बार तुमने कितनी ट्रॉफियाँ जीती? जरा दिखाओ तो।'' उनके इस सवाल पर काव्या की नजरें नीची हो गईं क्योंकि इस बार उसका प्रदर्शन पढ़ाई और अन्य गतिविधियों में औसत ही रहा, सो वह चुप ही रही।

नानी से सिर खुजाते हुए कहा– ''हम्म तो, हमारी बिटिया फोन की भूलभुलैया में गुम हो गयी हैं। अब उसे कहाँ ढूँढे?''

''क्या नानी आप भी!'' नानी के गले में हाथ डालते हुए प्यार से कहा।

''वैसे यह फोन बड़ी रोचक चीज है इसके लाभों को अनदेखा तो नहीं कर सकते, लेकिन इसके इशारों पर नाचने वाला बंदर बनने से भला कैसी समझदारी?'' काव्या नानी की बातें ध्यान से सुन रही थी।

''नानी, तो फिर क्या करें?'' काव्या ने अपनी उलझन बतायी।

नानी ने हँसते हुए कहा– ''यह तो बहुत सरल हैं, दृढ़ निश्चय, आत्मानुशासन और समय प्रबंधन से फोन के उपयोग को आवश्यकता के अनुसार से सीमित कर सकते हैं। इससे हमारा सबके साथ संपर्क भी बना रहता हैं और अपने लक्ष्य से ध्यान भी नहीं भटकता। अपने काम के बढ़िया प्रदर्शन के बल पर ही समाज में स्थायी जगह बनती है।'' रात में बिस्तर में लेटे–लेटे काव्या ने नानी की बातों पर शांत दिमाग से विचार किया। अगली सुबह वर्ष का अंतिम दिन था। नए वर्ष पर पिताजी ने जल्दी उठने का तो माँ ने नियमित सुबह की सैर का संकल्प लिया। अब बारी काव्या की थी तो उसने कहा– ''माँ–पिताजी! अपने अनुचित व्यवहार के लिए मुझे क्षमा कर दीजिए। आगे से ऐसा कभी नहीं होगा। नए वर्ष पर फोन के सीमित और आवश्यकता अनुसार प्रयोग करने का मैंने संकल्प लिया है। नानी! आपने मेरी आँखें खोल दीं, तकनीक से जीवन को सरल बनाना चाहिए पर उसकी अधीनता उचित नहीं।''

सबने ताली बजाकर उसका विश्वास बढ़ाया। थोड़ी देर में काव्या का फोन बजा, लेकिन उसे अनदेखा कर वह विद्यालय जाने की तैयारी में जुट गयी। फोन की परतंत्रता से स्वयं को मुक्त करने का उसका यह पहला प्रयास था, क्योंकि दृढ़ निश्चिय ही सफलता की पहली सीढ़ी हैं। उसका सतत प्रयास रंग लाया, सभी वर्गों में प्रथम स्थान प्राप्त कर फिर एक बार सभी को चौंका दिया। अब वह फिर से विद्यालय में शिक्षकों को प्रिय विद्यार्थी बन चुकी थी, फोन पर यह शुभवार्ता उसने नानी को सुनाई।

• इन्दौर (म.प्र.)

सावन आया

कविता

विकास शर्मा

सावन आया सावन आया।
हरियाली का मौसम लाया।
मस्ती छाई गाँव में।
करें पढ़ाई छाँव में।।
हरियाली की चूनर धानी।
झूला झूले वर्षा रानी।।

• बायतु (राज.)

उत्सव और प्रेम

कहानी

सीमा जैन 'भारत'

आज जंगल में एक समारोह था। जिसमें शहर के सारे जीव-जंतुओं को भी बुलाया गया था। हाथी के परिवार ने खाना बनाने का काम अपने जिम्मे लिया था। उन्होंने कई तरह के पकवान बनाए थे। जिराफ ने फलों के ढेर लगा कर रख दिए थे।

बंदरों ने उत्सव की जगह को सुंदर लताओं से सजा दिया था। किसी ने कोई फूल पत्ती भी नहीं तोड़ी थी। उन्होंने पेड़ों से लगी लताओं को ही इस पेड़ से उस पेड़ तक बांध कर बड़ा सुंदर शामियाना बना दिया था।

दिनभर खाना, नृत्य और मस्ती चलती रही। रात को तारों की छांव में सब सुस्ताने लगे। ऊपर जुगनू चमक रहे थे रोशनी से पूरा शामियाना जगमगा उठा। आज तो शेर के पास हिरण बैठा था तो अजगर के साथ बकरी के बच्चे खेल रहे थे।

हाथी की सूंड पर गिलहरियाँ फिसलपट्टी का मजा ले रही थी। कोयल गीत गा रही थी। इसी मस्ती भरे माहौल में हाथी ने कहा- ''तुम सबको पता है कि हमारे नाम किताबों में भी चलते हैं? हम पर कहानियाँ लिखी जाती है। जिन्हें पढ़कर बच्चे खुश होते हैं। हमारे नाम से मुहावरे भी बनाए जाते हैं।''

''यह मुहावरे क्या होते हैं बप्पा? लोमड़ी ने पूछा।

हाथी ने हँसते हुए कहा- ''अब तुम्हारी दादी जो कई पीढ़ियों पहले अँगूर ना खाई पाई थी तो उसने क्या कहा था?''

''**अँगूर खट्टे हैं।**''

''अब किसी से कोई काम ना हो और वो अपनी हार न माने और किसी चीज में ही बुराई निकाल दे तो उसे कहते हैं... **अँगूर खट्टे हैं।**''

उल्लू अपनी गर्दन को पूरे ३६० डिग्री घुमाते हुए बोला- ''बप्पा, मेरे लिए भी कुछ कहा जाता है क्या?''

''हाँ, पर याद नहीं आ रहा।''

''हाथी के बेटे ने कहा-''दादा आपके लिए कहा जाता है **अपना उल्लू सीधा करना।**'' उल्लू ने अपनी गोल आँखें मटकाते हुए पूछा उसका अर्थ क्या होता है?''

नन्हे हाथी ने समझाया-''किसी से मात्र अपना काम निकालने हेतु उसे उपयोग करना।'' चूहा जो गणेश जी का वाहन है बोला- ''जो जंगल में नहीं रहते हैं वो सब जानते हैं कि उनके बारे में क्या कहा जाता है। सबने एक साथ कहा- ''हाँ, ये मुहावरे हम सब सुनते हैं।''

बिल्ली जो चूहे को चीज खिला रही थी बोली मेरे बारे में कहा जाता है -''**सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली।**'' इसका अर्थ चूहे ने बताया ''बुरे काम करके पुण्य कमाने का ढोंग करना।'' बिल्ली चूहे को देख मुस्कुरा उठी।

''**बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे**'' ये भी तो बताओ मौसी ''खतरे से सावधान रहने के लिए दुश्मन की आवाज सुनाई पड़ जाए तो सावधान रह सकते हैं। मगर ताकतवर के गले में घंटी कौन बांध सकता है।''

इतने में बंदर बोला– मैंने सुना है मेरे लिए **बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद** कहा जाता है मतलब जिसे स्वाद की समझ न हो।'' उसके पास बैठे कुत्ते ने कहा ''आप क्यों बुरा मानते हो?'' मुझे तो कहा जाता है **धोबी का कुत्ता घर का ना घाट का**'' मुझे भी यह सुनकर बहुत बुरा लगता है। जो कहीं किसी काम का न हो उसके लिए ऐसा कहा जाता है।''

कुत्ते के पास बैठा मिट्ठू बोला और मेरे लिए कहा जाता है **मुंह मियां मिट्ठू होना** माने जो अपनी प्रशंसा अपने मुँह से करे। मैं आदमी की तरह बोल लेता हूँ। अपनी प्रशंसा खुद कर सकता हूँ। **तोते उड़ना** माने डर के मारे हिम्मत खत्म हो जाना। ये भी मेरे लिए कहा जाता है।

भैंस दुखी स्वर में बोली ''मैं अपने मालिक का हमेशा कहा मानती हूँ फिर भी मेरे लिए कहा जाता है **भैंस के आगे बीन बजाना** जो किसी की बात नहीं सुनते ऐसा तो उन्हीं के लिए कहा जाता है। मेरे लिए दो बात और कही जाती है **जिसकी लाठी उसी की भैंस** जिसके पास ताकत होती है सामान को वही सम्हाल सकता है। जो अनपढ़ रह जाते हैं उन्हें कहते हैं **काला अक्षर भैंस बराबर** मतलब जिनके लिए अक्षरों का कोई मतलब ही नहीं है वैसे ही है काले जैसे की काली भैंस।''

ऊँट, जिसे रेगिस्तान का जहाज भी कहा जाता है उसने अपनी लंबी गर्दन निकालते हुए कहा मेरे लिए कहा जाता है **ऊँट के मुंह में जीरा** अब यदि मुझे खाने में सिर्फ एक केला दिया जाए तो इतने बड़े पेट के लिए तो वो एक जीरे जितना ही होगा ना? मेरे लिए तो एक बात और कही जाती है **जाने ऊंट किस करवट बैठता है** मतलब निर्णय किस तरह होता है। जैसे मेरे बैठने से निर्णय की दिशा तय होती है।'' वो हँसते हुए बोला।

बैल ने अपने नथुने से एक गर्म साँस छोड़ते हुए कहा– ''किसी को अपनी आफत बुलाना हो तो कहा जाता है **आ बैल मुझे मार।** मगरमच्छ ने शरारत से कहा ''जब किसी को बैल ने मारा हो उसके चोट न लगी हो मगर वह झूठ–मुठ के आँसू बहाए तो उसे कहते हैं **मगरमच्छ के आंसू रोना।**

साँप जो कुडली मारे बैठा था उसने कहा ''जब कोई दोस्त बनकर दुश्मन का काम कर दे तो उसे **आस्तीन का साँप** कहते हैं।'' अजगर जो चंदन के पेड़ पर जाकर लिपट गया था वो वहीं से बोला– ''जब किसी के दुःख या परेशानी उसका पीछा नहीं छोड़ते तो उसके लिए कहा जाता है **अजगर की तरह कुंडली मारकर बैठना।**''

घोड़े ने हिनहिनाते हुए कहा **घोड़ा घास से दोस्ती करेगा तो खाएगा क्या** बहुत बार मैंने अपने मालिक को कहते हुए सुना था। वह अपना जो काम करता है उसके भी पैसे ना लेगा तो खाएगा क्या?'' लोग उसे पैसे देने में आना कानी करते हैं तो वो यही कहता है।

अपनी धीमी चाल से कछुआ आगे बढ़ा और बोला– ''मैं तो अपनी चाल के लिए **कछुए की चाल** ही जाना जाता हूँ। जो धीरे काम करते हैं उनके लिए यही कहा जाता है।'' कछुए के पास आकर कछुए के ही रंग का रंग बनाते हुए गिरगिट ने कहा ''जो लोग स्वार्थ के कारण समय के अनुसार अपना व्यवहार बदल लेते हैं उन्हें **गिरगिट की तरह रंग बदलना** वाले कहे जाते हैं।''

जिसकी निगाह और दिमाग तेज होता है उसके लिए कहा जाता है **उड़ती चिड़िया के पंख गिनना** चिड़िया उड़ती हुई बीच आई और बोली जब कोई गलती हो जाए उसे ठीक करने का रास्ता भी खत्म हो जाए तो कहते हैं **अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।**''

सवेरा होने को था। मुर्गे ने अपनी कुकडू–कू की ओर बोला कि हमारे घरों में मेरे लिए कहा जाता है **घर की मुर्गी दाल बराबर** अपने घर में आदमी की कद्र नहीं होती है। हमारे घर के पास जो पानी का कुंड है उसकी मछलियों के लिए कहा जाता है **एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है।** माने कि यदि एक आदमी में बुराई हो तो उसकी बुराई सब साथियों में आ जाती है।''

सुबह होने को थी। शेर ने अपनी ऊँची आवाज में दहाड़ते हुए कहा– ''हमेशा की तरह हम सबने आज इस आयोजन का मजा लिया। हम अपने उत्सव हमेशा एकता और प्रेम से मिलकर मनाते हैं ये बहुत खुशी की बात है। हम अपनी आदतों को, रहन–सहन को भूलकर अगली बार हम ऐसे ही प्रेम से मिलेंगे तब तक के लिए 'राम राम'... सबने एक स्वर में उत्तर दिया 'राम राम'।

• ग्वालियर (म.प्र.)

एकोपयोगी प्लास्टिक

कविता
आचार्य सुखदेव प्रधान

आओ कदम बढ़ायें हम,
मिलकर जोर लगायें हम।
प्लास्टिक जो अभिशाप बना है,
मिलकर इसे मिटायें हम।
कुछ पल का हम सुख न देखें,
भावी, पीढ़ी को बचायें हम।
जितना हो प्लास्टिक को त्यागें,
यह दिनचर्या लायें हम।
खेत, पठार, नदी और पर्वत,
सबको स्वच्छ बनायें हम।
संकल्प सुदृढ़ तो सब है संभव
संकल्पित जीवन बितायें हम।।
पेपर वाला बैग बनाकर,
नित उपयोग में लायें हम।
जन्म, मृत्यु, शादी या उत्सव,
डिस्पोजल ना अपनाएं हम।
यूज एंड थ्रो न करते जायें,
रिसायकल अपनायें हम।
सिंगल यूज प्लास्टिक पर,
आओ बैन लगायें हम।
आओ बैन लगायें हम।।

• बाराद्वार (छ.ग.)

गुरु महिमा

कविता

श्याम झंवर

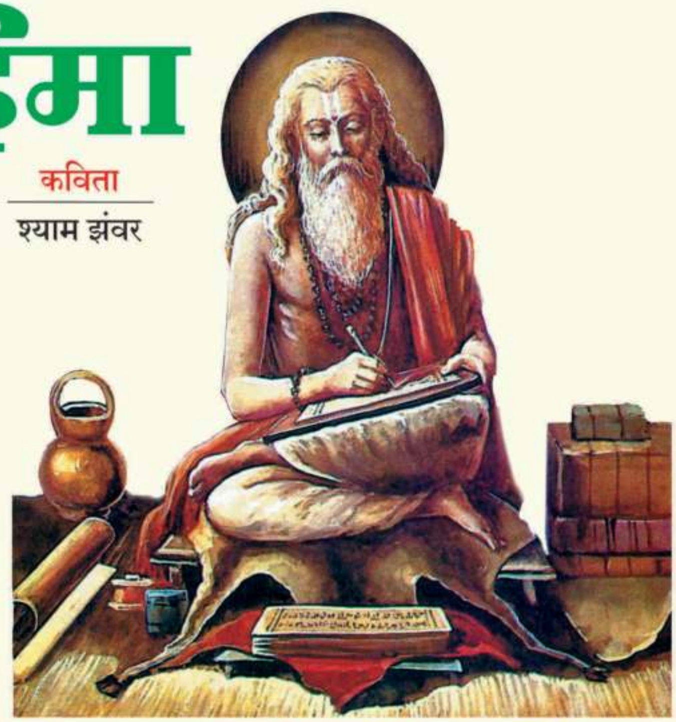

आदर सदा गुरु का करना
बच्चों इसे ध्यान में रखना
ईश्वर के प्रतिरूप गुरु हैं
इनको शीश झुकाए रखना
गुरु बिना है ज्ञान अधूरा
तुम भी जानो–जाने दुनिया
गुरु दिखाते लक्ष्य हमारा
चाहें कष्ट उठाये–पड़ना
ज्ञान बांटते पुण्य लुटाते
सभी गुरु हैं 'श्रेष्ठ–मना।'

• नीमच (म.प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *राक्षस राज रावण की लंका किस पर्वत पर बनी हुई थी?*
- *पाण्डवों में जुड़वा भाई कौन थे?*
- *यादवों के विनाश के बाद बलराम जी अपने कुछ स्वजनों के साथ नौका पर सवार होकर किस देश में जाकर बस गये थे?*
- *जबलपुर के पास भेड़ाघाट (नर्मदा तट) किस ऋषि की तपस्थली मानी जाती है?*
- *हलाहल पी लेने के कारण भगवान शिवशंकर को किस नाम से पुकारा गया?*
- *महाराज शिवाजी का छत्रपति के रूप में राज्याभिषेक किस विद्वान ने किया?*
- *आयुर्वेद को किस वेद का उपवेद कहा जाता है?*
- *भारतीय इतिहासकार जो आजाद हिन्द फौज में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के साथ अंग्रेजों से लड़े थे?*
- *सिरोही के किस शासक ने बादशाह अकबर की मुगल सेना को हराया था?*
- *रोहतांग सुरंग का नाम बदलकर भारत के किस पूर्व प्रधानमंत्री के नाम पर किया गया है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

सचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

अब वापस आ सकेंगें लुप्त हो चुके प्राणी

यूं तो धरती पर जानवरों की असंख्य प्रजातियां खत्म हो चुकी हैं पर अब वैज्ञानिक लुप्त हो चुकी प्रजातियों को वापस लाने की दिशा में काम कर रहे हैं। इसका मतलब यह नहीं निकालें कि फिल्म जुरासिक पार्क वास्तविकता में बदली जा सकती है। ***असल में किसी भी प्रजाति को जीवित करने के लिए उसके सुरक्षित डीएनए की जरूरत होती है और डायनासोर इतने समय पहले लुप्त हो चुके हैं कि उनसे संबंधित जेनेटिक सामग्री जीवाश्म के रूप में ही मिलेगी, सुरक्षित डीएनए के रूप में नहीं।***

समझें, कैसे होगी लुप्त प्रजातियों की वापसी?

कोशिका की खोज – वैज्ञानिक ठंडे स्थान में लुप्त प्रजाति की पूरी कोशिका खोजने की कोशिश करते हैं। जीवित कोशिका नहीं मिलता है तो वे मृत कोशिका सैल के न्यूक्लियस से काम चला लेते हैं।

मेजबान की तलाश – लुप्त पशु के सैल के न्यूक्लियस को एक मेजबान कोशिका में डाला जाता है। न्यूक्लियस विहीन मेजबान सैल उसी प्रजाति का हो। जैसे कि हिम युग के वूली मैमथ हाथी के लिए हाथी के सैल का उपयोग।

बढ़ोतरी – वैज्ञानिक भ्रूण का निर्माण होने तक नए सैल का विघटन करते रहते हैं। भ्रूण को मेजबान पशु के अंडे या गर्भाशय में बढ़ने के लिए रखा जाता है। इससे लुप्त पशु आकार ले सकता है।

कुछ साल पहले लुप्त हुई प्रजातियों को वापस लाने की बहुत अधिक संभावनाएं सामने आई हैं। ये तो माना जा सकता है कि हिमयुग के वूली मैमथ जैसे जानवर को दोबारा देखना मुमकिन होगा। 2003 में स्पेन और फ्रांस के वैज्ञानिकों की टीम पायरेनियन आईबेक्स नामक जानवर को फिर अस्तित्व देने में कामयाब रही। यह इससे तीन साल पहले लुप्त हो गया था।

अंतिम जीवित पायरेनियन आईबेक्स की क्लोनिंग से बना नया जानवर अधिक समय तक जीवित नहीं रहा।

लेकिन, नई खोज और डीएनए बनाने में मिली कामयाबी के कारण ऐसा जानवरों का जीवन बढ़ने के आसार हैं।

इन प्रजातियों पर काम हो रहा है

समाप्त

वेस्ट इंडीज

आलेख
श्रीधर बर्वे

विश्व के नक्शे पर यदि हम द्वीप समूहों को ध्यान से देखें तो ज्ञात होगा कि इंडोनेशिया, फिलीपींस, जापान और न्यूजीलैंड के बाद द्वीपों का सबसे बड़ा समूह कैरीबियन सागर में है। द्वीपों के इस समूह को वेस्ट इंडीज भी कहते हैं। वेस्ट इंडीज के द्वीपों के एक और कैरीबियन सागर है तो दूसरी और अटलांटिक महासागर है।

वेस्ट इंडीज अथवा कैरीबियन सागर के द्वीपों में सबसे बड़ा क्यूबा और दूसरे क्रम का द्वीप हिस्पैनियोला है। हिस्पैनियोला एक विभाजित द्वीप है जिसमें दो देश हैं– ''हैटी तथा डोमिनिकन रिपब्लिक/प्योर्टोरिको और जमैका जैसे थोड़े बड़े द्वीप किन्तु अधिक बड़े नहीं है। शेष द्वीप छोटे–छोटे स्वतंत्र देश है। जिनके नाम शेष विवरण निम्नानुसार हैं –

क्रं.	द्वीप का नाम	क्षेत्र. वर्ग कि.मी.	जनसंख्या	राजधानी	स्वतंत्रता दिवस
१	एंटीगुआ एंड बरबूडा	४४२	८८०००	सेंटजोंस	०१/११/१९८१
२	बहामा	१३९३९	३५०००	नसाऊ	१०/०७/१९७३
३	डोमिनिका	७५०	६७०००	रोसो	०३/११/१९७८
४	ग्रेनाडा	३४४	१५००००	सेंटजोर्जस्	०७/०२/१९७४
५	जमैका	११५००	२८०००००	किंग्स्टन	०६/०८/१९६२
६	सेंट किट्स नेविस	२६९	५५०००	बसेटेरे	१९/११/१९८३
७	सेंट विसेंट एवं ग्रेनेडाईस	३३८	११००००	किंग्सटाउन	२७/१०/१९७९
८	सेंट लूसिया	६१६	१७५००००	कैस्ट्रिज	२२/०२/१९७९
९	ट्रिनिडाड एवं टोबेगो	५१२८	१३५००००	पोर्ट ऑफ स्पेन	३१/०८/१९६२
१०	प्योर्टोरिको	१३९७०	४०००००	सेन हुआन	सं. रा.अमेरिका के साथ
११	बारबडोस	४३०	२६००००	ब्रिज टाउन	३०/११/१९६६

वेस्ट इंडीज के कुछ द्वीप अभी स्वतंत्र नहीं हुए हैं। वे है–

१. गवादेलुप और मार्टिनिक – फ्रांस के अधीन

२. एंग्विला, बरमूडा, मोंटसेराट– ब्रिटेन के अधीन

३. अरुबा, एंटीलिज, नीदरलैंड के अधीन

सेंट विन्सेंट एंड ग्रेनेडाइन का कभी युरुमीन नाम हुआ करता था। युरुमीन का अर्थ मूल निवासियों की भाषा में होता है 'घाटी में इन्द्रधनुष का सौंदर्य।'

वेस्ट इंडीज और क्रिकेट –

क्रिकेट की जब भी चर्चा होती है तो वेस्ट इंडीज का जिक्र होता है। विश्व की सशक्त क्रिकेट टीमों में वेस्टइंडीज की टीम है। भारत, श्रीलंका, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड की भांति वेस्टइंडीज कोई देश नहीं है। ब्रिटेन के पूर्व उपनिवेश कैरीबियन सागर के छोटे छोटे द्वीप मिलकर अपनी संयुक्त टीम बनाकर वेस्टइंडीज नाम से मैदान में उतरते हैं। एक अपवाद है– ''गायना'' जो द्वीप नहीं है किन्तु क्रिकेट के मामले में द्वीप भी भूमिका निभाता है। भौगोलिक परिभाषा के अनुसार गयाना भले ही द्वीप ना हो परन्तु भाषायी और सांस्कृतिक दृष्टि कोण से देखें तो दक्षिण अमेरिका की मुख्य भूमि पर स्थित यह देश द्वीप से कम नहीं है। गयाना के दक्षिण में विश्व का पाँचवा बड़ा देश ब्राजील है। जिसकी भाषा और संस्कृति का उद्भव पुर्तगाल से हुआ, पूर्व में सूरीनाम है जिसकी प्रमुख भाषा डच और संस्कृति पर नीदरलैंड का प्रभाव है। पश्चिम में स्पेनी भाषा और संस्कृति का वारिस देश वेनेजुएला है। गयाना के उत्तर में कैरीबियन सागर है, जिसके

द्वीप देशों के साथ गयाना समरस है क्योंकि इन द्वीपों और गयाना औपनिवेशिक अतीत और राजनैतिक पृष्ठभूमि एक समान है। पूरे अमेरिका महाद्वीप के साथ ही वेस्टइंडीज की कहानी यूरोपीय शक्तियों की ऐसी विजय गाथा है जिसकी बुनियाद खून और आँसुओं से डाली गई है। यह करुण कहानी शोषण के साथ ही अमेरिका महाद्वीप के मूल निवासियों के मूलोच्छेन के दुखों से भरी है। वर्तमान में इन द्वीपों में जो अश्वेत रह रहे है उनके पूर्वज अफ्रीका गुलामों के रूप में लाये गए थे। ये स्पेनी और अँग्रेज शासकों द्वारा लाये गए अफ्रीकी गुलामों और गिरमिटिया श्रमिकों की संतानें हैं। यूरोपीय मूल के लोग तो शासकों के रूप में बसे थे उन्हीं के लिए गुलाम और गिरमिटिया मजदूर लाए गए थे। कोलम्बस द्वारा अमेरिका की खोज के बाद वहाँ गोरे लोग पहुँचने लगे, उन्होंने वहाँ की भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर अधिपत्य कर लिया। गन्ने, कपास, केले, तम्बाकू के बागान में काम करने के लिए श्रमशक्ति की आवश्यकता थी। इसीलिए गुलाम तथा गिरमिटिया मजदूर वहाँ ले जाए गए।

वेस्टइंडीज में पहुँचे हुए गुलामों और श्रमिकों की संतानों की जनसंख्या लगभग पचास लाख है। ये लोग अपनी मूल संस्कृति से कटे हुए हैं। सांस्कृतिक विलगाव की पीड़ा दुःख आज की संतानों के पूर्वजों ने सहन किये थे औपनिवोशिक शासकों के अत्याचार नस्लभेद का अपमान शोषण के शूल और दुनिया से कटे होने का अकेलापन। लगभग ढाई–तीन शताब्दियों के सहजीवन में उन्होंने नया खिचड़ी सामाजिक जीवन भी विकासित किया है, परन्तु वे सलाद की प्लेट में रखे हुए भिन्न भिन्न फलों और सब्जियों की भांति अपनी पृथकता बनाये और बचाए हुए हैं। इस स्थिति के कारण एक समावेशी समरसता सभी संस्कृति समान रूप से पनप नहीं पाई है।

सतही तौर पर एकता दिखती है, तो क्रिकेट खेलने में कैलिप्सो गाने और हॉलीवुड मायानगरी द्वारा प्रदर्शित शैली को अपना कर आंतरिक अभाव की पूर्ति करने में। यद्यपि ऐसा हमारे देश और तीसरी दुनिया के और देशों में भी हो रहा है फिर भी सदियों से बहती आ रही अन्तर्धाराएं हमारे अंतर को सूना नहीं रहने देती। निरंतर सांस्कृतिक धारा और अन्य संस्कृतियों के नवाचारों में हमारा समाज सदैव सामंजस्य बिठाने में सक्रिय रहता है।

एक समाजशास्त्री का कथन है कि ''वेस्ट इंडीज के द्वीप समूह आजाद हैं, पर क्या वे सचमुच में आजाद हैं?

वेस्ट इंडीज मानचित्र

भौगोलिक रूप से संकुचित सीमाएं, कम आबादियाँ और संस्कृति का अभाव इन द्वीपों को वास्तव में द्वीप बनाता है, जिनके निवासी अपने अपने द्वीपों में सिमटे हुए हैं और जहाँ बाहर के लोग भी आते हैं, तो मौज मस्ती के लिए। स्थानीय लोगों को वे केवल चाकर (वेटर) भर मानते हैं।''

इस असम्मान और निजी संस्कृति के अभाव की पूर्ति के लिए वेस्ट इंडीजियों ने क्रिकेट को साधना और माध्यम बनाया है, ताकि वे हीनता बोध से उबर सकें। इस खेल के द्वारा वेस्टइंडीज के द्वीपों में सामूहिक रूप से अपनी अस्मिता निर्माण का प्रयास किया है।

क्रिकेट और तेज गति का संगीत वेस्ट इंडीज के द्वीपवासियों को स्वयं के अकेलेपन से मुक्त करने के साथ साथ उन्हें विश्व से जोड़ता भी है। इस जुड़ाव में उनका अल्हड़पन भी शामिल है। ये सब वेस्टइंडीज के निवासियों की विशिष्टता का निर्माण भी करते हैं। क्रिकेट कभी इन द्वीपों के जीवन की एक सहज गतिविधि हुआ करता था वह अब व्यावसायिक रूप लेता जा रहा है। और ऐसा हमारे देश और अन्यत्र भी हो रहा है।

ये नन्हे–नन्हे, छोटे छोटे देश आकार में भले ही लघु हों और सामान्यतया अल्पज्ञात तथा अचर्चित रहते हों, फिर भी इनका अपना महत्व और स्थान है। संसार में आज जो अशांति है, आतंक और युद्ध के साये में सारा संसार सहमा सहमा रह रहा है, ये सब बड़ी शक्तियों और बड़े देशों की पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा और वर्चस्व की दौड़ के कारण हैं। शांति पूर्वक जी रहे इन नन्हें देशों में न द्वेष है और न प्रतिस्पर्द्धा। जियो और जीने दो के सिद्धांत को व्यवहार में उतारते हुए जर्मन विद्वान शुमाकर की उक्ति को सार्थकता प्रदान कर रहे हैं– SMALL IS BEAUTIFUL लघु ही सुंदर है।

ये देश छोटे अवश्य हैं, परन्तु नगण्य नहीं।

• इन्दौर (म.प्र.)

।। बाल प्रतिभा ।।

होनहार बिरवान के होत
चीकने पात

बाल कलाकार : रूबल जैन

एक प्रसिद्ध कहावत है कि पूत के पाँव पालने में ही दिख जाते हैं। हम यहाँ जिस बाल कलाकार का परिचय आपसे करवा रहे हैं वह भी एक ऐसी ही होनहार बाल प्रतिभा है नाम है रूबल जैन। वय की दृष्टि से अभी मात्र १४ वर्ष का किशोर, लम्बा कद, गौरा रंग, आकर्षक व्यक्तित्व और असाधरण प्रतिभा का धनी। लखनऊ (उ.प्र.) निवासी रूबल एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न कलाकार हैं। अभिनय के क्षेत्र में यह अभी से अपनी पहचान बना चुका है।

रूबल की अभी तक की उपलब्धियाँ गिनें तो वह ४५० से अधिक नृत्य कार्यक्रम कर चुके हैं एवं उनके फिल्मों, लघुफिल्मों, विज्ञापनों, वृत्तचित्रों (डाक्यूमेन्ट्रीज) और धारावाहिकों में सफल अभिनय कर चुके हैं। लखनऊ के चिड़ियाघर ने रूबल को अपना ब्राण्ड एम्बेसेडर बनाया है।

जॉली एल एल बी २ में अक्षय कुमार, रेड में अजय देवगन, आर्टिकल १५ में आयुष्मान खुराना, तापसी पन्नू, प्रतीक बब्बर, नीना अरोरा, मनोज पाहवा आदि के साथ व भाग्य न जाने कोई (अवधी फिल्म), जबरिया जोड़ी में सिद्धार्थ मलहोत्रा, परिणिति चौपड़ा, सहर में पंकज कपूर, बबलू बेचलर, शरमन जोशी हुड़दंग में, सन्नी कौशल आदि के साथ अभिनय कर चुका रूबल की रंगबाज नामक वेबसिरीज, सावधान इण्डिया, बस थोड़ा सा (धारावाहिक, यू.पी. दूरदर्शन) तथा स्वच्छ भारत अभियान के यू.पी. दूरदर्शन निर्मित गीत में भी भूमिका निर्वाह कर चुका है।

रूबल इन्टरनेशल चिल्ड्रन्स फिल्म फेस्टीवल अवार्ड, नेपाल भारत मैत्री सम्मेलन अवार्ड (नेपाल), राष्ट्रीय रत्न अवार्ड (हरियाणा), यंग अचीवर्ड अवार्ड (दिल्ली), लीडर्स ऑफ आगरा अवार्ड (आगरा उ. प्र.), यूनिवर्सल एक्सीलेंस अवार्ड (फरीदाबाद) धानी चुनरिया अवार्ड (लखनऊ), कलारत्न सम्मान (लखनऊ), उ. प्र. बाल रत्न अवार्ड (लखनऊ), नेता तुम्ही हो कल के अवार्ड(दिल्ली) सहित ९४ से अधिक पुरस्कार सम्मान प्राप्त कर चुका है।

रूबल अपनी समवस्यक उन सभी किशोर एवं बाल प्रतिभाओं के लिए एक प्रेरक कलाकार है जिसने अपनी योग्यता सिद्ध करने के लिए बड़ा होने की राह न देखी और निरंतर आगे बढ़ता गया।

खुशियों वाला जन्मदिन

कहानी

अनुपमा 'अनुश्री'

बहुत सुहानी सी प्रफुल्लित कर देने वाली सुबह। चूं चूं, चीं चीं करते पंछी, तो कहीं कहीं कूह कूह गाती कोयल की गुदगुदाती बोलियाँ। और ये फर्र फर्र करते पंछी इस अलमस्त सी भोर में निकल पड़े थे अपने दाना–पानी की दौड़ में।

नन्हें बच्चे पंछी मुसकुराते, चहकते अपने–अपने माता पिता पंछी को राम–राम बोल रहे थे और उनसे जल्दी आने का वादा भी ले रहे थे। चारों तरफ खुशनुमा सा माहौल, ठंडी–ठंडी बयार और धीरे–धीरे रोशनी फैलाने निकल पड़ी सूर्य की किरणें...

तभी खिड़की से एक चंचल किरण बिना अनुमति के मोहक के कमरे में चली आई और उसके गाल को थपथपा कर बोली।

''नमस्ते, शुभ प्रभात ''

अरे, ये क्या– अलसाया सा मोहक, कुनमुनाते हुए करवट बदल कर फिर सो गया।

थोड़ी देर में एक आवाज गूँजी– ''बेटा! जल्दी उठो, एक सुन्दर सुबह तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है और माँ ने मोहक की चादर खींचते हुए उसे बड़े लाड़ दुलार से चुंबन देते हुए कहा– ''शुभ जन्मदिवस, मोहक बेटा, सदा खुश रहो। आज तुम पूरे बारह वर्ष के हो गए हो। अब बहुत सारे शारीरिक, मानसिक परिवर्तन तुम्हें अनुभव होंगे जिनके साथ तुम्हें सहजता के साथ सामंजस्य बनाकर एक अच्छे बच्चे के रूप में बड़ा होना है।''

''नहा धो लो, विद्यालय के लिए तैयार होना है''– माँ मुसकुराई। अपने नाम के अनुरूप ही मोहक आकर्षक था। स्वयं अपने काम करने में निपुण और पढ़ाई में भी आगे और उसकी ये आदत घर और विद्यालय में सबको पसंद थी। हाँ, थोड़ा जिद्दी तो था। अपनी दादी की कहानियाँ भी उसे बहुत पसंद थीं।

यह सुनकर मोहक उत्साह और आनंद से भर गया। और फटाफट चादर हटा तैयार होने पहुँच गया क्यूंकि आज तो उसका जन्मदिन था न खुशियों वाला।

हाँ विद्यालय से आकर शाम को जोरदार उत्सव की तैयारी ढेर सारी साज–सजावट के साथ माँ ने सोच कर रखी थी।

''मोहक बेटा!'' पिताजी की आवाज आयी।

''हाँ पिताजी! अभी आया...। मोहक अपना भोजन का डिब्बा बस्ते में रखते हुए भागा।

''शुभ प्रभात पिताजी!''

शुभ जन्मदिन बेटा, ईश्वर तुम पर सदैव प्रसन्न रहें'' और पिताजी ने उसे गले लगा लिया। रास्ते में ढेर सारी बातें हुई पिताजी से और तभी गुजरते हुए उसने देखा, एक बनती हुई बिल्डिंग के नीचे तीन–चार बच्चे बहुत शोर कर रहे थे। शायद अपनी माँ से कुछ मांग रहे थे।

''माँ रोज–रोज ये रोटी और चटनी नहीं खाएँगे, हमें मिठाई दो आज।

''कहाँ से लाऊँ?'' जो है खाओ'' माँ ने डाँट कर कहा।

मोहक ये देखकर कुछ अनमना हुआ, फिर उसे याद आया उसे तो अपने मित्रों को आमंत्रित करने हेतु

सूची तैयार करनी है। ... और वो तुरंत लिखने लगा, आदित्य, खुशी, पार्थ, राशि, अंश, गौरव, ओह्हह! कितना आनंद आने वाला है आज शाम उत्सव में।

और शाम के उत्सव में सभी बच्चों ने मिलकर जोरदार धूम धड़ाका मचा दिया। और ढेर सारे उपहार और सबका प्यार दुलार पाकर मोहक बहुत खुश था। ढेर सारे गुब्बारे और रंग बिरंगी पन्नियों से सजा संवारा घर मोहक को बहुत प्यारा लगा। सभी ने एक दूसरे को लड्डू खिलाये और फिर बोले– ''चलें सभी अपने अपने अंदाज में खड़े हो जाओ, क्यूंकि अब है 'सेल्फी टाइम'

और पार्थ ने आनन फानन में कई सेल्फीज ले डालीं। सभी दोस्त खूब उधम मस्ती करके चले गए। अचानक मोहक को रास्ते में बिल्डिंग के नीचे दिखे बच्चे याद आ गए– ''पिताजी! गाड़ी निकालिए न!''

''क्या हुआ मोहक! इस समय कहाँ जाना है'' – वे आश्चर्य से बोले!

मोहक ने तुरंत खाने के कुछ पैकेट्स तैयार किये और पिताजी को कहा हमे ये पैकेट्स उन बच्चों को देना है जो हमने बिल्डिंग के नीचे दिखे थे। मोहक ने बताया दादी ने कहा था कि कम से कम एक दिन में एक अच्छा कार्य अवश्य करना चाहिए।

मोहक और पिताजी चल दिए उन बच्चों को पैकेट्स बाँटने। और मोहक बहुत खुश हुआ इन बच्चों के हँसते, खिलखिलाते चेहरे देखकर। साथ ही उसे संतोष मिला दादी की सीख को मानने से। अब सही मायनों में मना था मोहक का खुशियों वाला जन्मदिन।

• भोपाल (म.प्र.)

आपकी पाती

प्रत्येक अंक के आरम्भ में बड़े भैया की बात बड़ी ही लाजमी और व्यावहारिक जीवन को लेकर की गई बात सरल और सटीक होती है। जो शिक्षाप्रद होती है। पढ़कर छोटे बड़ों को उस पथ पर चलने की राह बताती है।

इससे पहले हर अंक पर मुख्यावरण पृष्ठ पर मनभावन रंगीन, सौम्य, सुन्दर चित्र पूरे अंक को पढ़ने को आकर्षित करता है। चित्र देखकर कली–कली खिल जाती हैं। भीतरी सामग्री तो पूर्ण शिक्षाप्रद होती ही हैं छोटी–छोटी रचनाएँ भी वहीं करामाती हैं। केवल कोरी कल्पनाएँ नहीं हकीकत बयान करती हैं।

अंक बड़ा मनभावन व हर्ष, आशा, उमंग, ऊर्जा से भर जाता है। कमाल के फोटो व चित्रांकन है। फोटो व राष्ट्र के लिए अच्छे करने की प्रेरणा देता है। इतना जरूर कहूँगा कि–

देवपुत्र मासिक पत्रिका नहीं अपितु इन्दौर नगरी से उतरा एक फरिश्ता है जो सारी की सारी हकीकत बयां करती है। धन्य धन्य प्रधान सम्पादक जी व कर्मठ कौशल सम्पादक मंडल व सरस्वती बाल कल्याण न्यास को कोटिश साधुवाद है। पत्रिका उत्तरोत्तर राष्ट्र के उन्नयन की ओर अग्रसर है, यह हर्ष का विषय है। सभी रचनाएँ सचित्र रंगीन फिर भी मूल्य कम है, यह खुशी की बात है। सदैव उन्नतीशील बना रहे देवपुत्र।

*** सांवलाराम नामा, भीनमाल (राज.)**

बाल पत्रिका देवपुत्र का अप्रैल २०२० शौर्य एवं बलिदान अंक प्राप्त हुआ। मासिक पत्रिका देवपुत्र के इस अंक के ऐतिहासिक आवरण से ही ज्ञात हो जाता है कि यह शौर्य एवं बलिदान अंक है। एक नजर अनुक्रमणिका पर डालें तो देश की चारों दिशाओं के विभिन्न राज्यों की वीरता और पराक्रम की ओजस्वी कहानियाँ, कविताएँ एवं नाटिका आदि रचनाएँ विद्वान लेखकों के द्वारा लिखी गई हैं। उनके साथ परिवेश के अनुकूल चित्र भी बनाए गए हैं।

पत्रिका का एक–एक पृष्ठ वीर रस में डूबा हुआ महसूस हो रहा है। यह अंक पठनीय एवं संग्रहणीय है। इतनी अधिक वीरतापूर्ण सच्ची कहानियाँ एक साथ पढ़ने के लिए मिलना आजकल दुर्लभ है। संपादक मंडल ने एक सुनिश्चित योजना से यह स्थाई महत्व का कार्य किया है, उन्हें बधाई। आशा है इस अंक का पाठक वर्ग में भरपूर स्वागत होगा। *** प्रकाश तातेड़, उदयपुर (राज.)**

(लेखक 'बच्चों का देश' बाल पत्रिका के संपादक है।)

|| हमारे राज्य वृक्ष ||

उत्तर प्रदेश का राज्य वृक्ष अशोक

• डॉ. परशुराम शुक्ल

भारत का यह मूल वृक्ष है,
मैदानों से नाता।
बर्मा और मलाया में भी,
कहीं-कहीं मिल जाता।
उगता अपने आप कहीं यह,
कहीं उगाया जाता।
मध्यम ऊँचाई का पौधा,
सुन्दरतम कहलाता।
सीधा तना गोल अति सुन्दर,
धूसर रंग निराला।
वन उपवन की शोभा है यह,
पौधा फूलों वाला।
लम्बे और नुकीले पत्ते,
पावन माने जाते।
शादी उत्सव में इनसे हम,
वंदनवार बनाते।
अंग बहुत उपयोगी इसके,
ऐसी दवा बनाते।
रोग सभी महिलाओं वाले,
जड़ से दूर भगाते।

• भोपाल (म.प्र.)

तोते

● सुरेशचन्द्र 'सर्वहारा'

हरी हरी शाखों पर बैठे
हरे रंग के प्यारे तोते,
देख देख इनकी सुंदरता
मन भी हरे हमारे होते।
सुबह-सुबह ही ये उड़ आते
सूर्य- किरण पंखों में ढोते,
दिनभर फिर टें टें के स्वर को
मुक्त पवन में रहते बोते।
कुछ कच्चे पक्के फल खाते
अपनी मस्ती में कुछ खोते,
शाम ढले ये लौट ठिकाने
पेड़ों पर रहते हैं सोते।
इनको जालों में फँस देखा
प्राणों से हाथों को धोते,
कैद पिंजरों में होकर ये
दुःख सागर में खाते गोते।
इन्हें पालकर जी बहलाते
दादा-दादी, पोती-पोते,
नहीं जानते हैं वे लेकिन
मन ही मन ये कितना रोते।

– कोटा (राज.)

तोताराम

● कीर्ति श्रीवास्तव

तोता राम, तोता राम
क्यों करते इतना आराम
अब फिर टेर लगाओ न
मिट्ठू- मिट्ठू चिल्लाओ न।

पानी पीलो, मिर्ची खालो
फिर अच्छी-सी तान सुना दो
दूध- रोटी है तैयार
चित्रकोटी कह दो इक बार।

सुन्दर सा घर बनवाएंगे
झूला उसमें लगवाएंगे
मान भी जाओ बात हमारी
करो झूलने की तैयारी।

– भोपाल (म.प्र.)

तोता जी

● आर. पी. मिश्रा

तोता जी पिंजरे में रहते
जग जाते हैं बड़े सबेरे
जागो फिर सबसे हैं कहते।
भीगा चना रोज हैं खाते
खाकर अपना स्वास्थ्य बनाते।
राम नाम कहना है आता
टाँय टाँय फिर भी चिल्लाते।
घरवालों को पहचान गये हैं
अजनबी देख शोर मचाते।
दादाजी का कहा मानते
आदर देते चुप हो जाते।
उड़ना भी आता है उनको
नहीं किसी को हैं बतलाते।

– ग्वालियर (म.प्र.)

आपकी कविता

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'तोता' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

....
....
....
....
....
....
....

।। विज्ञान जागृति कथा ।।

एक अनोखी यात्रा

कहानी

विजय जी. वलेरा (खत्री)

बीप...बीप...बीप... ऑक्सीजन सिलेण्डर के साथ जुड़ी हुई मशीन में से आ रही आवाज के साथ ही पृथ्वीवासियों का दिल बैठा जा रहा था। ऑक्सीजन की कम हो रही मात्रा मानों उनकी जीवन रेखा के साथ खेल खेल रही थी।

अन्य ग्रह पर जाकर जीवन और मानवजाति का अस्तित्व बचाने की पृथ्वीवासियों को आशा थी। क्योंकि पृथ्वी का वातावरण इतना प्रदूषित हो चुका था कि सबको साँस लेने में भी परेशानी हो रही थी। वैज्ञानिकों के मुताबिक 'विक्रांत' ग्रह पर जाने से सबको सुरक्षित रखा जा सकता है। इसी कारण पृथ्वीवासियों के लिए विक्रांत ग्रह आशा की किरण समान था।

प्रभास ने अपने वैज्ञानिक मित्र नगेन्द्र, सुरेश और माया के साथ मिलकर पृथ्वीवासियों को बचाने को जिम्मेदारी ली थी। अंतरिक्षयान अब पृथ्वी से बहुत दूर पहुँच चुका था। प्रभास अंतरिक्षयान को सही दिशा में ले जा रहा था।

जहाँ जन्म लिया उस पृथ्वी की ओर प्रभास ने अंतरिक्षयान में से नजर डाली। पृथ्वी का ऐसा भयानक चित्र उसने स्वप्न में भी सोचा नहीं था। अपने स्वार्थ के कारण पृथ्वी के पर्यावरण की जरा सी भी चिंता न करने वाले मनुष्यों के कारण ही तो पृथ्वी की आज ऐसी दशा हुई थी।

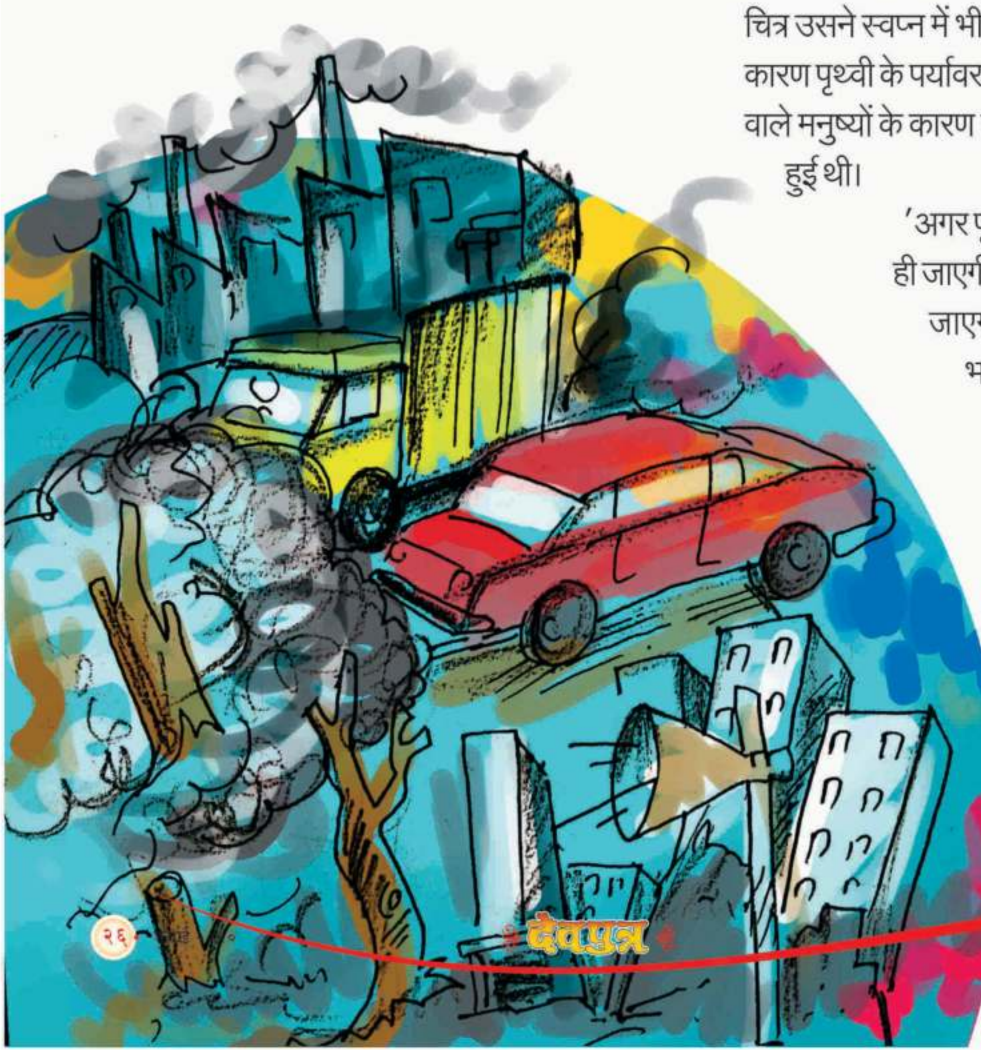

'अगर पृथ्वी पर प्रदूषण की मात्रा बढ़ती ही जाएगी तो पृथ्वी पर रहना मुश्किल हो जाएगा'– वैज्ञानिकों की यही भविष्यवाणी आज वास्तविक बन चुकी थी।

वाहन...कारखाने... रसायन...। प्लास्टिक... प्रदूषित पानी... बड़े–बड़े उद्योग...। और ऐसी अनेकानेक प्रवृत्तियों के कारण

पैदा हुए प्रदूषण के बादलों ने पूरी पृथ्वी को कब्जे में ले रखा था। चारों ओर प्रदूषण की मात्रा असहनीय बन चुकी थी। शुद्ध ऑक्सीजन और ताजी-प्रफुल्लित हवा अब स्वप्न मात्र बन चुके थे। प्रदूषण और भयंकर गरमी के कारण पृथ्वी अब पृथ्वीवासियों के रहने लायक नहीं रही थी।

इस समस्या से बचने के लिए प्रयास और उसके दोस्तों ने पहले से ही आयोजन किया हुआ था। भिन्न-भिन्न अंतरिक्षयानों में कई इंसानों को समाया गया था। सभी इंसानों को पृथ्वी पर छाए प्रदूषण से बचाने के लिए पृथ्वी से दूर स्थित टैरेस्ट्रियल ग्रह 'विक्रांत' पर ले जा रहा था।

जीवनदायिनी और पोषणदात्री पृथ्वीमाता को उसके हाल पर छोड़कर सभी पृथ्वीवासियों ने विदा ली। जीव हथेली में लेकर सब पृथ्वीवासी आश्रय ढूंढने के लिए ब्रह्माण्ड में भटक रहे थे। अंतरिक्ष संस्थान के खगोलशास्त्रियों ने ऐसी संभावना व्यक्त की थी कि 'विक्रांत' ग्रह पर जीवन बचाने के लिए संपूर्ण अनुकूलित वातावरण है।

इसलिए प्रभास अंतरिक्षयान को 'विक्रांत' ग्रह की ओर ले जा रहा था।

लेकिन...?

क्या मानवजाति का अस्तित्व बचाने में सफलता प्राप्त होगी?

क्या विक्रांत ग्रह पर जीवन टिकाने के लिए की गई संभावना सत्य सिद्ध हो पाएगी?

ऐसी कई विचारों से प्रभास का हृदय मचल रहा था।

प्रभास ने अपने वैज्ञानिक दोस्तों से कहा- ''हम सबने मानवजाति को पहले से ही सावधान किया था कि वायु-जल-जमीन का प्रदूषण कम करने का प्रयास करो। परंतु स्वार्थी मानवों ने हमारी एक न सुनी। लगातार पर्यावरण का विनाश करते रहे। मैंने जीवनदायिनी धरती माता का, पोषणदात्री पृथ्वी की ऐसी दशा स्वप्न में भी नहीं सोची थी।

नगेन्द्र ने प्रभास को सांत्वना देते हुए कहा- ''प्रभास! अब दुखी होने का क्या फायदा? जिस भयानक परिणाम की चिंता थी वह करुण दिन तो आ चुका है। प्रदूषण के बादलों ने पृथ्वी को बुरी तरह अपने झपट में ले रखा है। जैसे किसी निर्दोष को जंजीरों से बाँध रखा हो वैसे प्रदूषण के जंजीरों से बंधी पृथ्वी क्या आजाद हो पाएगी?'' नगेन्द्र की आँखों से आँसू गिर पड़े।

प्रभास ने उसके कँधे पर हाथ रखकर कहा- '' मित्र! यह सब प्रकृति का विवेकहीन उपयोग करने से हुआ है। विज्ञान और तकनीकि के कारण इंसानों को आरामदायक जीवन तो मिला, लेकिन शुद्ध ऑक्सीजनयुक्त वायु, पीने लायक पानी और पोषणक्षम जमीन अब नहीं रहीं। प्रदूषण के कारण जीवन की तमाम अनुकूलताएँ अब समाप्त हो चुकी है। अब तो 'विक्रांत' पर न पहुँचे तब तक अन्तरिक्षयान में उपलब्ध ऑक्सीजन ही जीवन का आधार है...।'' (बीप...बीप...बीप...)

सुरेश की नजर ऑक्सीजन सिलेण्डर की ओर पड़ी फिर उसने कहा, ''दोस्तों! पृथ्वी की तंदुरुस्ती टिकाने के लिए इंसानों ने पेड़ ही कहाँ रहने दिए हैं? जहाँ देखो वहाँ सीमेंट के जंगल खड़े कर रखे हैं। पेड़ जैसे उनकी शोभा कम कर रहे हों, वैसे पेड़ों का नाश कर दिया है। अपने स्वार्थ और फायदे के लिए पेड़ों का नामोनिशान मिटा रखा है। पृथ्वी के फेफड़े कहलाने वाले पेड़ ही नहीं रहे। इसलिए तो पृथ्वी प्रदूषित हो चुकी है। अब देखो... दूर से पृथ्वी की हालत...। क्या यही हमारी पृथ्वी है?''

कहकर सुरेश ने अपनी ऊंगली से पृथ्वी की ओर

संकेत किया। सब पृथ्वी को देख रहे थे। प्रभास ने भी जी भरकर पृथ्वी माता को देखा।

वह आँखों में आँसू के साथ बोला– ''नहीं... नहीं... मित्र! यह वो पृथ्वी नहीं है, जिसकी यशगाथा हम गाया करते थे। यह तो बीमार पृथ्वी है, जिसकी साँसें प्रदूषण के कारण घुट रही है।''

माया ने कहा– ''हमने कभी सोचा नहीं था कि हमें इस तरह पृथ्वीमाता को छोड़ देना पड़ेगा... अन्य किसी ग्रह पर रहने के लिए जाना पड़ेगा। अब तो विक्रांत ग्रह पर पहुँचने पर ही नया जीवन मिलेगा।''

इन चारों दोस्तों की बातें अंतरिक्षयान में उपस्थित अन्य पृथ्वीवासियों ने सुनी। वह पश्चाताप कर रहे थे। आखिर पृथ्वी पर प्रदूषण फैलाने में सभी बराबरी के जिम्मेदार जो थे।

वैज्ञानिकों ने संभावना व्यक्त की थी अभी कई दिनों तक प्रदूषण के बादल पृथ्वी से दूर चले जाए और पृथ्वी फिर से रहने लायक बने ऐसी कोई आशा नहीं है। ऐसी गंभीर परिस्थिति में पृथ्वी पर रहने से मानवजाति को खतरा है। इन अनिश्चितताओं के बीच 'विक्रांत' ग्रह पर जाने में ही सबकी भलाई है।

अंतरिक्षयान आकाश में तेज गति से जा रहा था। हर किसी के मन में एक ही विचार चल रहा था...

क्या पृथ्वी को बचाया नहीं जा सकता था?

सब कुछ संभव था। लेकिन पृथ्वीवासियों ने अपने ही हाथों से आश्रयस्थान पर आग लगा दी थी। माता समान पृथ्वी के आरोग्य के बारे में कभी सोचा ही नहीं।

लंबी अंतरिक्ष यात्रा के बाद माया चिल्ला उठी– ''देखो....विक्रांत...! दूर से विक्रांत ग्रह दिखाई दे रहा है। हम वहाँ जरूर पहुँच जाएँगे।''

माया के चिल्लाने से सबका ध्यान 'विक्रांत' ग्रह की ओर गया। सभी को आशा की किरण दिखाई दी। नया आश्रयस्थान मिलने की खुशी होने लगी। 'विक्रांत' ग्रह मानों मरणासन्न को नया जीवन मिल गया हो ऐसा मालूम पड़ा।

सभी ईश्वर से प्रार्थना कर रहे थे कि वे सुरक्षित 'विक्रांत' ग्रह पर पहुँच जाए।

तभी फिर से आवाज आई...

बीप... बीप... बीप...

यह आवाज अंतरिक्षयान में स्थित अंतिम

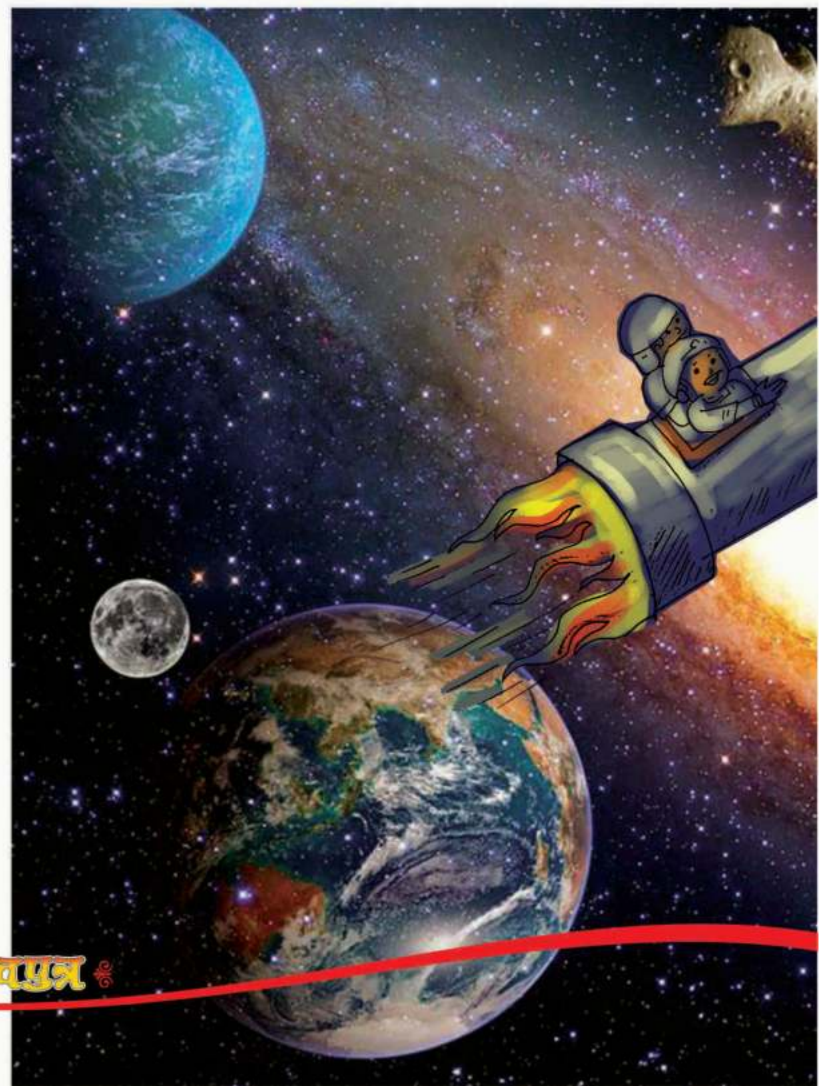

ऑक्सीजन सिलेण्डर से प्राणवायु बहुत कम हो जाने का सूचना कर रहा था।

आँखों के सामने नया जीवनदाता 'विक्रांत' ग्रह दिखाई दे रहा था... तो दूसरी ओर सबकी साँसें कम ऑक्सीजन के कारण घुट रही थी। प्रभास, नगेन्द्र, सुरेश और माया चारों वैज्ञानिक दोस्तों को उनका अभियान असफल होने का भान हुआ। सचमुच, बहुत करुण परिस्थिति ने जन्म लिया था।

प्रभास ने पृथ्वीवासियों को बचाने के लिए जी – जान लगाकर प्रयत्न किया था। लेकिन अभी तो वह खुद ही जीने के लिए तड़प रहा था। जीवन और मृत्यु के बीच खींची हुई रेखा अब अदृश्य होने लगी।

प्रभास का मस्तिष्क घूमने लगा...

चक्कर आने लगे...

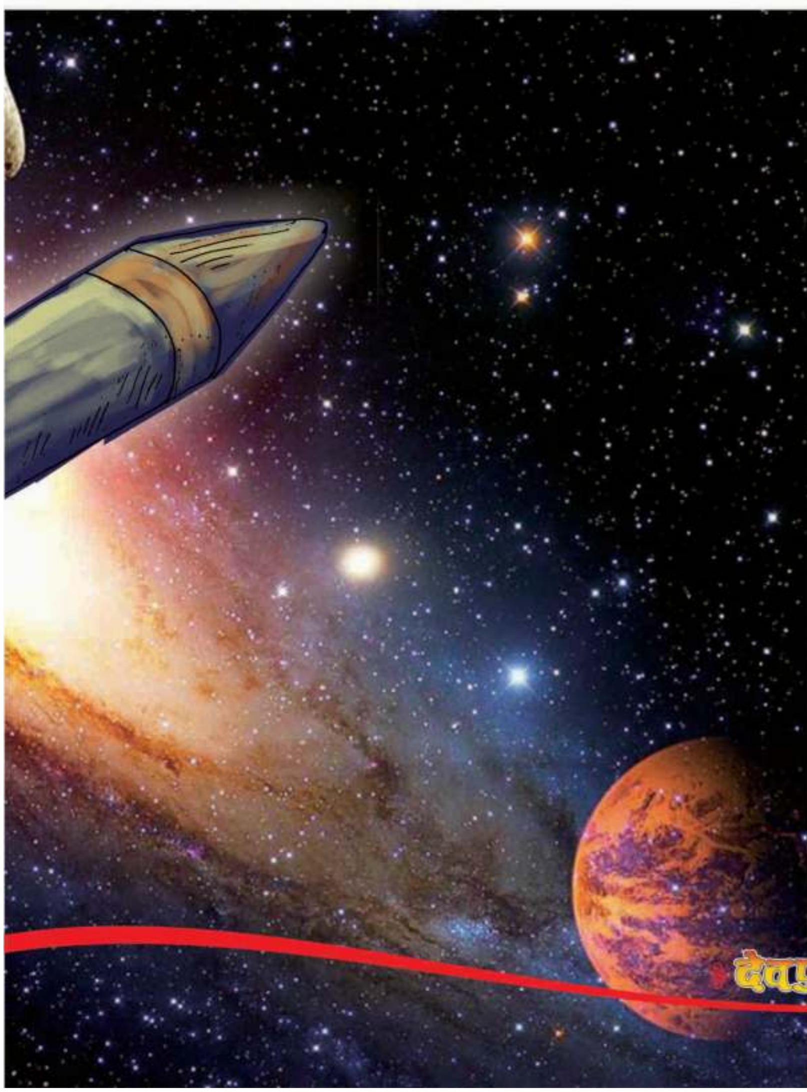

आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा...

तभी अंतिम... लंबी और भयानक... आवाज आई...

बीप... बीप... बीप...

बीप... बीप... बीप...

और... ?...?...?

ट्रीन...ट्रीन... ट्रीन...

ट्रीन...ट्रीन... ट्रीन...

(यह अलार्म घड़ी की आवाज थी।)

अलार्म बजते ही प्रभास गहरी नींद से अचानक जाग गया। सुबह हो चुकी थी...।

उठकर खिड़की खोलते ही प्रभास के कमरे में सुबह की ताजी –प्रफुल्लित हवा की लहरें फैलने लगी। सूरज की किरणों ने रात के भयानक अंधेरे को नष्ट कर दिया था। प्रभास समझ चुका था कि उसने केवल एक भयंकर स्वप्न देखा था।

युवा अंतरिक्षयात्री और वैज्ञानिक पृथ्वी का प्रदूषण दूर करने के लिए कार्यशील था। हमारी दिन प्रतिदिन की प्रवृत्तियों के कारण बढ़ते हुए प्रदूषण से वह सबको बचाना चाहता था।

स्वप्न में देखा हुआ पृथ्वी का चित्र वास्तव में न बदल जाए उस बारे में वह चिंतित था। इसलिए पृथ्वीवासियों को पर्यावरण के बारे में जाग्रत करने के लिए प्रभास महान मानवयात्रा के लिए पुनः निकल पड़ा।

क्या प्रभास के कदमों की आवाज आपको सुनाई दे रही है? सुनाई दे रही हो? तो चलो, हम भी पृथ्वी को बचाने की इस महान मानवयात्रा में जुड़ जाएं।

• डीसा (गुजरात)

|| स्तम्भ ||

स्वयं बनें वैज्ञानिक :
जादू की कुर्सी

आलेख	अनुवाद
डॉ. राजीव तांबे	सुरेश कुलकर्णी

आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि जादू की कुर्सी कैसी होती है। चलो इसके लिए सामग्री क्या लगेगी यह देख लीजिए।

सामग्री के रूप में हमें एक कुर्सी लगेगी।

तो चलो अब हम अपने प्रयोग को शुरु करते हैं। हो जाइये तैयार।

सर्व प्रथम एक लड़का इस कुर्सी पर बिना झुके सीधे बैठेगा। उसके पैर जमीन पर सीधे टिके होने चाहिए। फिर उसको कहे कि अपने हाथों को अपनी छाती पर फोल्ड करने का कहे। अब इस लड़के को अपने हाथ कहीं पर भी न रखते हुए और आगे न झुकते हुए कुर्सी पर से उठना होगा।

क्या होता है? इस लड़के को? कितना भी जोर लगाइये यह अपने आप को एक इंच भी हिला नहीं सकता है। यही तो इस प्रयोग की विशेषता है।

चलो यह क्यों हुआ यह आपको बता देते हैं।

अपने शरीर का वजन यह गुरुत्वाकर्षण के अनुपात के अनुसार बराबर उतना ही होता है। हम जो भी क्रिया करते हैं वह करने के लिए अपना शरीर उसका गुरुत्वाकर्षण और जमीन इन सब में एक निश्चित लम्बाई का होना नितान्त आवश्यक है। कारण यही अपने शरीर का संतुलन बनाये रखने में सहायक होता है।

अब अपने प्रयोग में वह लड़का कुर्सी पर बैठा हुआ है और उसके कारण उसका गुरुत्वाकर्षण भी कुर्सी में समाहित रहता है। अगर वह खड़ा हुआ तो उसके शरीर में निहित गुरूत्वाकर्षण भी खड़ा होना स्वाभाविक है, जब तक वह बालक आगे की ओर झुकेगा नहीं वह खड़ा नहीं हो पाएगा यही सच्चाई है, कारण बालक का गुरुत्वाकर्षण उसके चरणों में है और वह बैठा है। इसी कारण वह एक इंच भी उठ नहीं पाता।

• पुणे (महाराष्ट्र)

उलझ गए!

• देवांशु वत्स

गोपी ने मोहन के बारे में राजन से कहा - 'इसके पापा की सासू माँ मेरे पापा की भाभी की भी सासू माँ है।' गोपी और मोहन आपस में रिश्ते में क्या लगेंगे?

(उत्तर इसी अंक में)

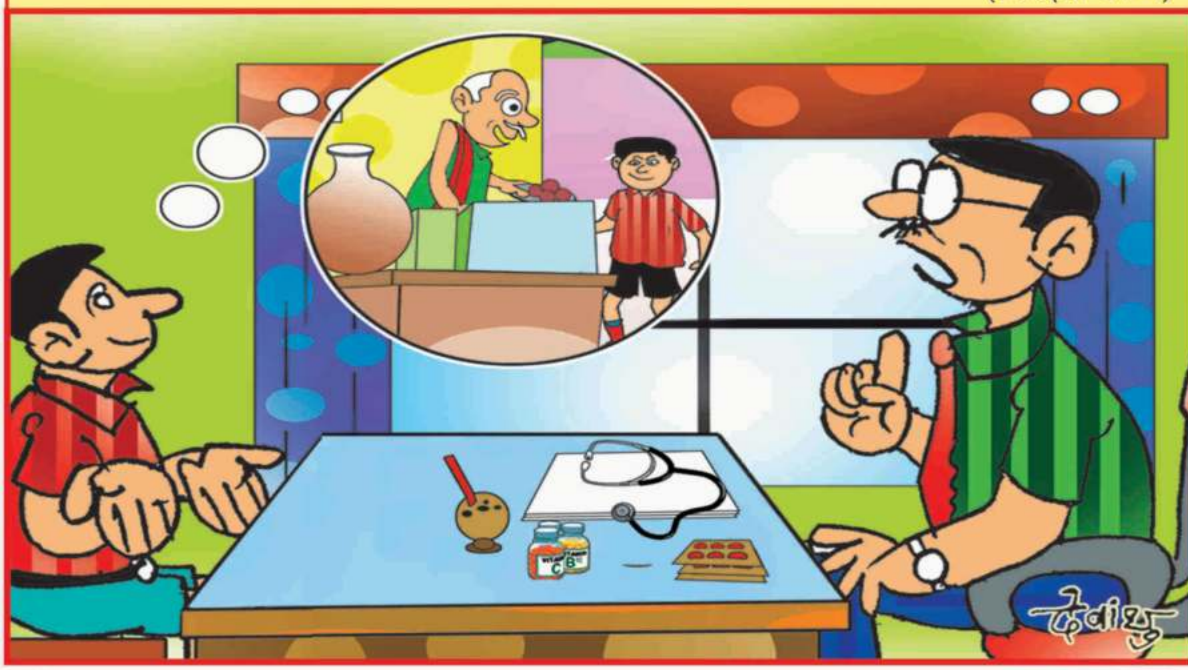

छोटी -छोटी बातें
चित्रकथा: देवांशु वत्स
हरियाली अमावस्या
आज हम पौधे लगाएंगे!
हाँ, पहले मेरे यहाँ!
मोहन, अब तुम्हारे घर चलते है।
हाँ, चलो!
मोहन के यहाँ भी सभी ने मिल कर पौधे लगाए। पर राम ने कहा...
तुम्हारे पौधे तो सूख जाएंगे मोहन!
ऐसा क्यों बोल रहे हो राम?
मोहन, तुम्हारे कमरे में कोई नहीं हैं, लेकिन पंखा चल रहा है और लाइट भी जल रही है...
...और यहाँ नल से पानी भी रिस रहा है।
ओह! हाँ!
मेरे पिताजी कहते है कि पर्यावरण बचाने के लिए केवल पौधे लगाना ही काफी नहीं है पानी और...
...बिजली बचाना भी जरूरी है।
तुमने ठीक कहा राम। अब से मैं इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखूंगा।

उधमी अमर

कहानी
नीरज त्यागी

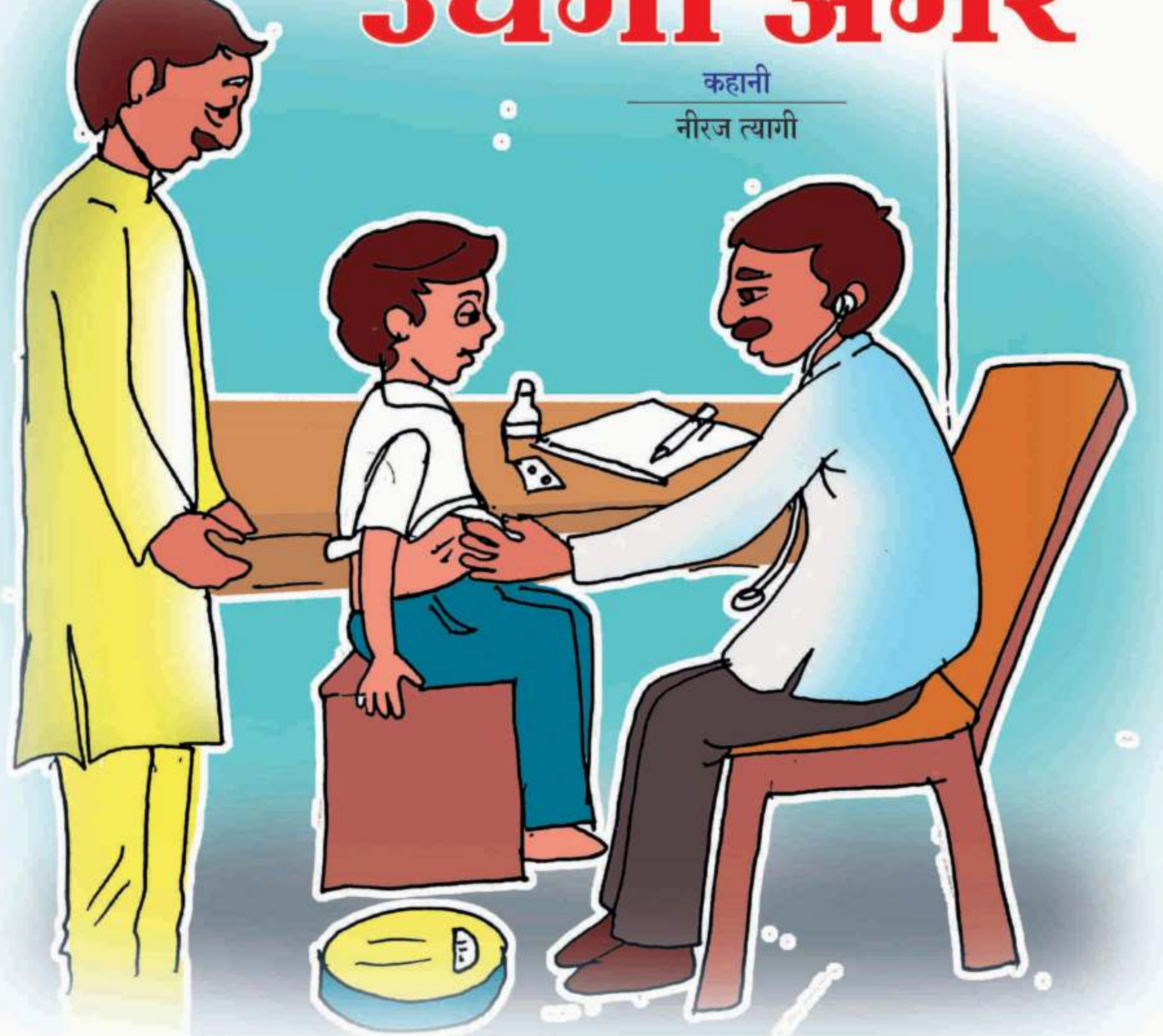

अमर दसवीं कक्षा की पढ़ाई कर रहा था। आमतौर पर इस कक्षा के विद्यार्थी काफी उधमी होते हैं और उसी प्रकार अमर का भी व्यवहार काफी उधमी था।

अमर पढ़ने में सामान्य था और उसकी कोशिश हमेशा परीक्षा से बचने की रहती थी। दसवीं के प्री बोर्ड की परीक्षा चल रही थी। अमर काफी घबराया हुआ था क्योंकि उसकी तैयारी परीक्षा के लिए अच्छी नहीं थी।

अमर अपने पिता से भी काफी डरता था। हालांकि उसके पिता का स्नेह उसके प्रति बहुत अधिक था क्योंकि वह अपने माता–पिता का इकलौता बेटा था।

अमर की परसों गणित की परीक्षा थी लेकिन उसकी तैयारी बिलकुल भी नहीं है। पिता से डरा हुआ अमर समझ ही नहीं पा रहा था किस तरह परीक्षा से बचे ताकि उसे अपने पिता से डॉट ना पड़े।

आखिर वह सुबह आ ही गई जब उसकी परीक्षा होनी थी। अमर काफी घबराया हुआ था। तभी उसने अपना दिमाग लगाया और बहुत जोर से पेट दर्द होने का नाटक किया।

वह दर्द से बड़े ही नाटकीय अंदाज में कराह रहा था। क्योंकि उसके माता–पिता उससे बहुत प्रेम करते थे। इसलिए वह दोनों घबरा गए और अमर के पिता उसे तुरंत

एक बड़े से अस्पताल में लेकर चल पड़े।

अमर को इस बात की बहुत खुशी थी कि अपने इस नाटक से वह परीक्षा देने से बच जाएगा। अमर के पिता कारखाने में बड़ी मेहनत करके घर की जीविका चलाने लायक ही कमा पाते थे।

अमर के पिता ने अपनी आय के हिसाब से अपनी हैसियत से भी बड़े विद्यालय में पढ़ाया था ताकि उसका भविष्य उज्ज्वल हो जाए।

अब वह अमर को लेकर अस्पताल पहुँच गए। डॉक्टर ने अमर के पेट को हर तरफ से दबाया और काफी देर जांच करने के बाद उन्होंने अमर के पिता को बताया कि शायद अमर को अपेंडिक्स है और उसको भर्ती करके ऑपरेशन भी करना पड़ सकता है।

अब अमर अपने नाटक पर काफी पछता रहा था। छोटा बच्चा इतना घबरा गया कि शायद उसे ऑपरेशन ना करवाना पड़ जाए इस डर का उसके पास कोई ईलाज नहीं था और वह अपने बुने जाल में फँस गया था।

अमर को अस्पताल में भर्ती कराया गया। दो दिन तक उसके सभी टेस्ट कराए गए जिसके उपरांत डाक्टर ने उसके पिता को उसे छुट्टी ले कर घर जाने के लिए कहा और बताया कि शायद कुछ खाने–पीने का इंफेक्शन था। जिसकी वजह से उसके पेट में दर्द हुआ।

दो दिन के इलाज में उसके पिता की बड़ी मेहनत की कमाई से जुड़े हुए लगभग ४० हजार इस प्रक्रिया में खर्च हो गए। अमर अपने पिता के मेहनत से कमाए गए पैसे इस तरह जाने से बहुत परेशान हुआ और बहुत ही लज्जा अनुभव कर रहा था।

इसके बाद अमर ने अपनी पढ़ाई से कभी मुँह नहीं फेरा और पूरी लगन से अपनी पढ़ाई में लग गया और दसवीं की परीक्षा में उम्मीदों से परे बहुत ही अच्छे अंकों से उसने विद्यालय में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया।

दसवीं परीक्षा के पास करने के बाद उसने पिता को बताया कि उसने प्री बोर्ड में पेट दर्द का नाटक किया था। जिसकी वजह से उसके पिता के काफी पैसों का नुकसान हो गया था।

यह बताते हुए अमर की आँखों में पश्चाताप के आँसू थे। अमर ने पिता ने अमर के सर पर हाथ रखा और अपने बेटे से कहा कि उसकी पढ़ाई के प्रति इस लगन को देखने के लिए वह अपना कुछ भी देने के लिए तैयार हैं। आँखों में आँसू भरे अमर अपने पिता के गले लग गया।

• गाजियाबाद (उ.प्र.)

भक्ति जगा दो

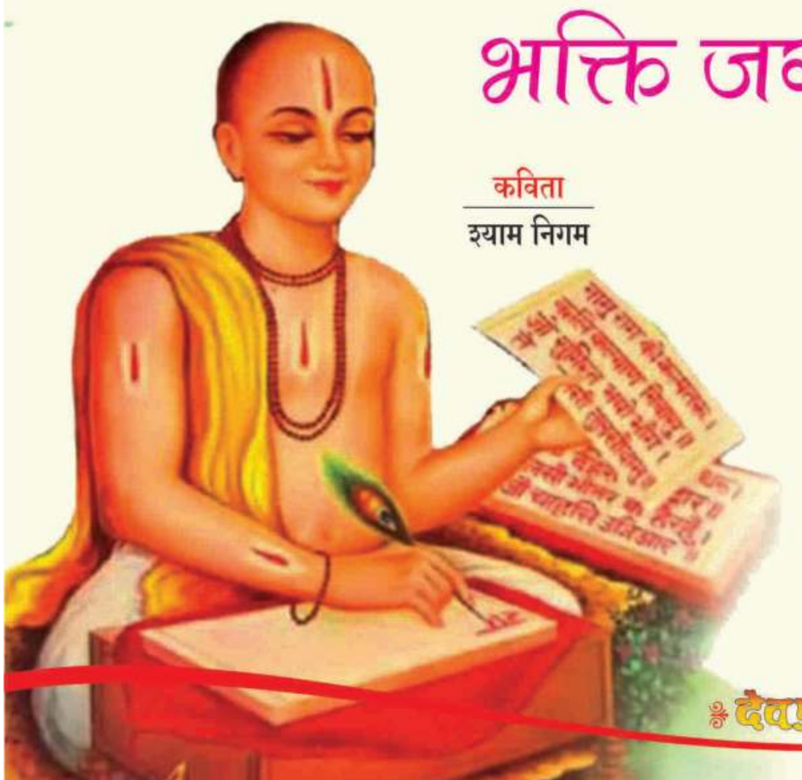

कविता

श्याम निगम

तुलसी बनकर जन्म मुझे दो,
मुझको तुलसीदास बना दो।
बाबा नरहरि दास मिले फिर,
चित्रकूट में रमण करा दो।।
काशी धाम हृदय बन जाये,
विश्वनाथ का शिष्य बना दो।
हनुमान हो संग हमारे,
रामचरित मानस लिखवा दो।।
सियाराम मय यह जग जानूँ,
ऐसा मुझको मंत्र रटा दो।
राम तिलक करते मिल जायें,
ऐसी उनमें प्रीति जगा दो।।

• कानपुर (उ.प्र.)

पत्तियाँ पहचानो

बच्चो, इन फूलों को नीचे बनी पत्तियों को पहचानो और बताओ किस फूल की पत्ती कौन सी है?

• राजेश गुजर

लड्डू

कहानी

डॉ. शशि गोयल

''अभी...! अभी...! कहाँ हो अभी चलो अब अंदर बहुत देर हो गई खेलते'' माँ ने अभिषेक को आवाज लगाई। अभिषेक दौड़ता हॉफता अंदर आया, फ्रिज में से पानी की बोतल निकाली पी और उसे बाहर ही रखकर वापस दौड़ गया। ''रुक अभी! रुक'' माँ आवाज लगाती रह गई। ''जब से भाग रहा है यह नहीं है कुछ खा ले बार बार आता है पानी पीता है भाग जाता है। दीवाना हो रहा है खेल के पीछे।'' माँ बड़बड़ा रही थी। बाहर ही कोठी में पार्क था। वहाँ कई बच्चे शाम को पाँच बजे से इकट्ठे हो जाते थे। गर्मियों की छुट्टियाँ थी कुछ के घर बच्चे आये भी हुए थे इसलिए अभिषेक को खेलने में बहुत अच्छा लग रहा था। पढ़ना भी नहीं पड़ रहा था। माँ पढ़ने का भी नहीं कह रही थी।

अभिषेक अब बहुत देर हो गई आ जाओ बाहर भागते अभिषेक को रोकते माँ ने कहा। तभी बाहर एक ऑटो रुका उसमें से अभिषेक के मामा जी उतरे। मामाजी को देख अभिषेक खुश हो गया और खेल रोककर उसकी प्रतीक्षा कर रहे बच्चों को अभिषेक ने संकेत से मना कर दिया अब नहीं आयेगा।

''अभिषेक लाओ मामाजी के लिए ठंडा पानी लाना'' कहकर माँ बैठक कक्ष में ए सी चलाने चली गई। ''बहुत दिन बाद आया है बच्चू! क्या बात है? अब इधर आना नहीं होता? माँ ने कहा। ''हाँ जिज्जी! जब जिस काम के लिए आता था न अब उसका कार्यालय हमारे शहर में भी खुल गया है। अब सब वहीं हो जाता है और काफी रजिस्ट्रेशन बगैरह ऑनलाइन हो जाते हैं। अब तो बस आज कुछ विशेष काम था इसलिए आना पड़ा मैंने कहा बहुत दिन हो गये आपसे और वसुधा से मिले। मिल भी आऊँगा।'' वसुधा छोटी बहन थी वह भी आगरा में ही थी।

''मिल आये वसुधा से?''''नहीं जिज्जी वहीं कार्यालय में बहुत देर हो गई अब जा भी नही पाऊँगा, बस छः बजे की बस से निकल जाऊँगा नौ बजे तक पहुँच जाऊँगा आप तो जानती हो रास्ता अभी कच्चा है ना।''

''हाँ भाई! ठीक ही है रुकना हो तो रुक जाना।''

तभी अभिषेक पानी लाया। पानी का गिलास मामाजी ने एक सांस में खत्म कर दिया,

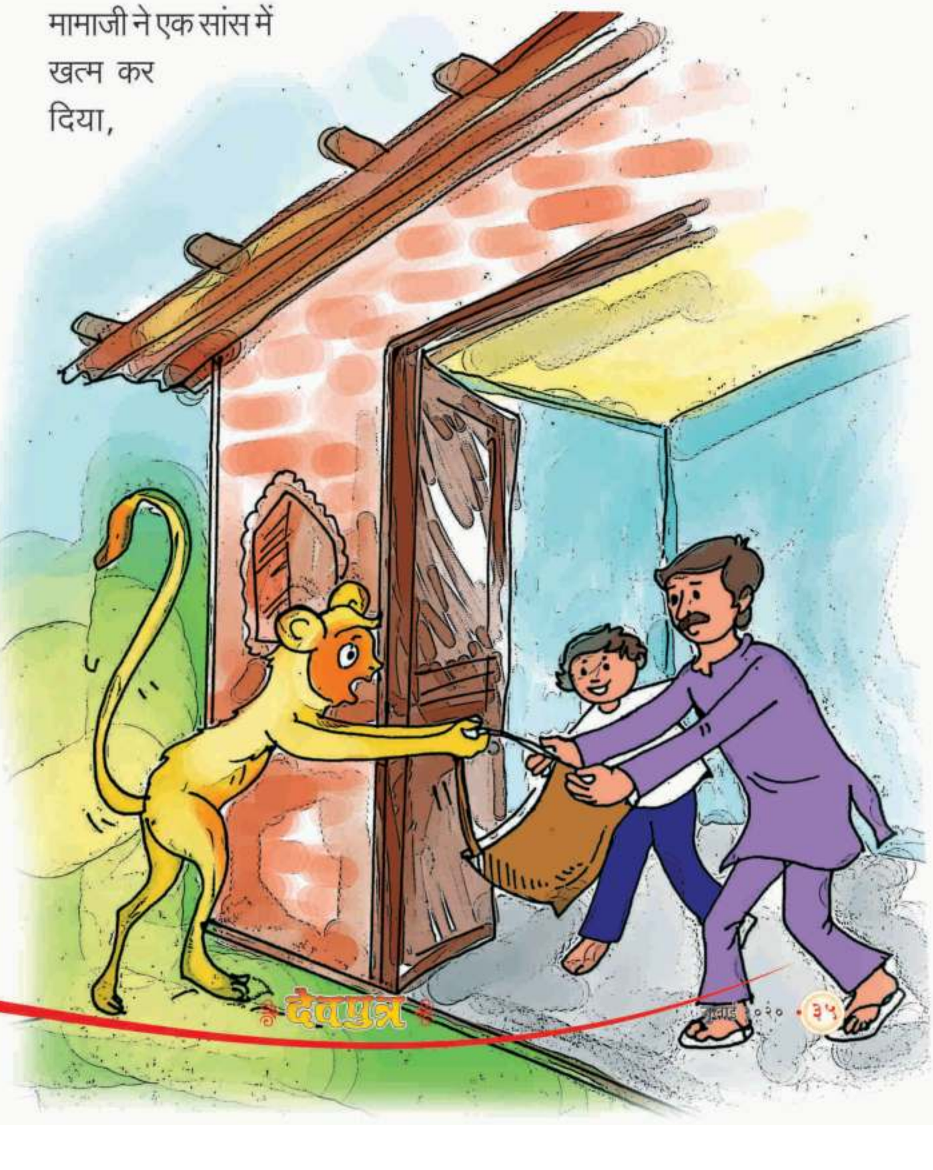

''अभिषेक बेटा! जरा ठंडा पानी और पिला हलक सूख रहा है। पानी तो साथ में था पर गरम हो गया था।''

अब अभिषेक ने माँ की ओर देखा तो माँ उठकर फ्रिज के पास आई कोई आधी कोई खाली पाँचों बोतल फ्रिज के बाहर पड़ी थी जिन्हें पीकर अभिषेक खाली अधखाली बाहर ही रखकर छोड़ गया था।

माँ ने शिकायत की सी निगाहों से अभिषेक को देखा तो अभिषेक ने आँख झुका ली बर्फ की ट्रे निकाली वह भी खाली थी उसकी बर्फ की चुस्की बनाकर अभिषेक ने खाली थी।अब बता बेटा मामाजी को पानी कहाँ से दूँ कहते हुए एक कटोरे में पानी फ्रीजर में रख बंद किया जरा देर में कुछ तो ठंडा हो जाये।

''अब तुम ही बताओ क्या पियोगे'' पिताजी भी आते होंगे वो भी ठंडा पानी मागेंगे। अभिषेक को गलती का अनुभव हो रहा था। वह बातलों को आर ओ से भरकर फ्रिज में लगाने लगा।

''कहाँ रह गई जिज्जी! आओ किसी चक्कर में मत पड़ना कुछ देर बैठो।'' मामा जी उठकर अंदर आ गए।

''नहीं ? बच्चू जरा सा कुछ ले आऊं भूख लगी होगी'' कहती हुई माँ ने जल्दी से पकौड़े बनाये तब तक पानी ठंडा हो गया था और मट्ठे का पाउच फ्रिज से निकालकर भाई को दिया।

अभिषेक कोशिश कर रहा था कि माँ का गुस्सा ठंडा हो जाये क्यों कि उसने मामा के पास मिठाई का थैला देखा था जो उन्होंने सामने कुर्सी के पास मेज पर रखा था। मामा ने कहा था बेसन और आटे के लड्डू बनाकर माँ ने रखे हैं। दो डिब्बे वसुधा के घर भिजवा सको तो भिजवा देना। शायद एक बंदर भी मामा की बात सुन रहा था। वह दरवाजे से अंदर आया और थैला उठाने लगा। माँ तो डरकर चीखने लगी यह बंदर कहाँ से आ गया। झपट कर मामा जी ने थैले के लिए खींचतानी होने लगी। बंदर घुर्राकर मामा को डराने की कोशिश कर रहा था पर मामा थैला छोड़ने के लिए तैयार नहीं थे माँ कहने लगी ''छोड़ दे बच्चू! काट न ले बंदर?''

''अरे! जिज्जी ऐसी घुड़की तो रोज ही देखते हैं अगर इनसे डरे तो रह लिए गाँव में चालीस चालीस बंदर कभी कभी दरवाजे पर बैठे रहते हैं।'' तब तक अभिषेक और माँ भी थैले को बचाने लगी तो बंदर दूर बैठ गया। पर अभी गया नहीं था। ''ये आखिर आ कैसे गया'' माँ हैरान थी।

माँ छत के जीने का दरवाजा नीचे से जरा टूटा है ना ओर बीच का खुला है अभिषेक ने बताया। ''ओह! इतनी पतली जगह से घुस गया। कमाल है इनका शरीर है कितना लोच होता है अब यह यह भागे कैसे?''

''ठहरो माँ! मैं भगाता हूँ।'' अभिषेक बोला। उसने मामा की प्लेट से बिस्कुट उठाया और धीरे–धीरे आगे बढ़कर एक बिस्कुट उठा लिया। अब अभिषेक ने आधा बिस्कुट बिल्कुल दरवाजे के बाहर फेंका बंदर उसे उठाने के लिए दरवाजे से बाहर गया तो दरवाजा उढका लिया। अब अपनी खिलौने की दराज में से उसने आवाज वाली पिस्तौल निकाली और दरवाजे की नली से बाहर की ओर दबा दी बंदर तेजी से भागा।

कुछ देर इधर उधर दौड़ता रहा ऊपर दो बंदर किचिकिचाने लगे फिर बंदर को रास्ता याद आ गया वह निकल गया। ''अरे वाह! बहादुर बेटा वाह!'' मामाजी बोले। माँ भी मुस्कुरा रही थी तो वह बोला, ''माँ लड्डू।'' हाँ हाँ ले माँ को हँसते देख उसने जल्दी से दो लड्डू उठा लिये।

माँ बोलीं– रात को दो ठीक है। हाँ हाँ ज्यादा मत खा लेना पेट का ध्यान रखना ''कहती हुई माँ टूटे दरवाजे पर आँगन में कोने में रखी ईंट रखने लगी। कल बढई बुला दरवाजा ठीक कराती हूँ। और अभिषेक ईट उठा कर उन्हें देते देख रहा था कि माँ का गुस्सा अब बिल्कुल शांत है। उसके हाथ और जल्दी चलने लगे।

• आगरा (उ.प्र.)

सही उत्तर

संस्कृति प्रश्नमाला – त्रिकूट, नकुल–सहदेव, सऊदी अरब, भृगु, नीलकण्ठ, पण्डित गागाभट्ट, अथर्ववेद, पुरुषोत्तम नागेश ओक, महाराव सुरताण देवड़ा, अटल बिहारी वाजपेयी

पत्तियाँ पहचानों – १स, २अ, ३ब, ४ई, ५द, ६ए, ७इ, ८ऐ, ९ओ

उलझ गए – गोलगप्पे वाला मोनू के नाना जी है

परी कथा सी

|| अरुणिमा सिन्हा ||

कहानी

पवित्रा अग्रवाल

दुर्घटना की शिकार होकर तृप्ति ने एक हाथ गंवा दिया था। अब वह विद्यालय नहीं जा रही थी। उससे मिलने को उसकी दादी आगरा से आई हुई थीं। दादी ने देखा तृप्ति उदास रहने लगी। है पर उन्हें देखते ही चिहूँक उठी।

''दादी हमें कोई कहानी सुनाओ... सुनाओगी न दादी?''

''हमारी रानी बिटिया ने कहा है तो सुनानी तो पड़ेगी। बताओ कौन सी सुनाऊँ?''

''दादी आपकी ज्यादातर कहानियाँ तो मेरी सुनी हुई हैं, कोई नई कहानी सुनाओ।''

''नई कहानी, अच्छा जरा सोचने दो। किसी साहसी लड़की की कहानी सुनाऊँ?

''हाँ दादी सुनाओ।''

''एक लड़की थी। उसके पिता नहीं थे, माँ काम करके बच्चों को पढ़ा रही थी। उस लड़की को वालीबॉल खेलने में बहुत रुचि थी। विद्यालय में वह वालीबॉल खेलती थी। धीरे–धीरे इसमें वह आगे बढ़ने लगी। विद्यालयों–महाविद्यालयों की प्रतियोगिताओं में भाग लेती हुई वह राष्ट्रीय स्तर पर खेलने लगी थी। एक बार वह किसी नौकरी के साक्षात्कार के लिए ट्रेन के सामान्य डिब्बे में बैठ कर लखनऊ से दिल्ली जा रही थी।

''सामान्य डिब्बा क्या होता है दादी?

''जनरल बोगी में जाने के लिए पहले से आरक्षण नहीं कराना पड़ता, स्टेशन पर जाकर टिकट लो और उसमें बैठ जाओ। लेकिन उसके केवल एक दो डिब्बे ही होते हैं और उसमें बहुत भीड़ होती है।''

''अच्छा फिर क्या हुआ दादी?''

''रात को करीब एक बजे डिब्बे में कुछ बदमाश घुस आए और यात्रियों से कीमती चीजें छीनने लगे। उस लड़की ने एक सोने की चेन पहन रखी थी उसे वह छिनने लगे पर उस साहसी लड़की ने चेन नहीं दी और उनका विरोध करने लगी। गुस्से में उन बदमाशों ने चलती रेलगाडी से उसे बाहर फेंक दिया।''

''बाप रे! फिर वह बच गई दादी?''

''हाँ वह बच तो गई पर रातभर पटरियों के पास पड़ी रहीं। उसके पास से बहुत सी रेलगाड़ी गुजर गई। सुबह कुछ लोगों ने उसे देखा तो उसे पास के किसी अस्पताल में पहुँचाया। उसका बहुत खून बह चुका था। एक पैर कट गया था, दूसरे पैर की हड्डियाँ टूट चुकी थी। वह सर से पैर तक चोटों से भरी हुई थी। डॉक्टर और उनके सहयोगी बात कर रहे थे इसका पैर काटना पड़ेगा पर हमारे पास बेहोश करने वाली दवा नहीं है और तुरंत खून भी चढ़ाना होगा, खून की व्यवस्था भी हमारे पास नहीं है। डॉक्टर और उसके सहयोगी ने अपना खून उसको चढ़ाया। बेहोशी की सी हालत में भी सब सुन रही थी। बोली डॉक्टर साहब रात भर भयंकर दर्द सहा है आप बिना एनस्थिसिया के ही मेरा पैर काट दीजिए।

पैर काटने और जरूरी बैंडेज करके उसे दूसरी जगह शिफ्ट कर दिया गया। वह करीब चार महीने दिल्ली के अस्पताल में रही। उसे चारों ओर अंधेरा दिखाई देता था कि अभी तो सारा जीवन पड़ा है, अपाहिज की जिन्दगी कैसे जियूँगी। पर उसने हिम्मत नहीं हारी। उसे आर्टिफिशियल पैर लगा दिया गया दूसरे पैर में भी रॉड डाली गई थी। पर अपने परिवार से लगातार सहयोग से वह हिम्मत नहीं हारी। अस्पताल के बिस्तर पर ही उसने एवरेस्ट पर चढ़ाई करने का लक्ष्य अपने सामने रखा, जिसने भी सुना वहीं उसे पागल समझने लगे। एवरेस्ट पर भारत में पहली महिला बछेंद्री पाल चढ़ी थी पर वह पूरी तरह स्वस्थ थीं। पर यह टूटे हुए पैरों से कैसे कर पाएगी। पर वह लड़की अस्पताल से छुट्टी मिलने पर घर न जाकर बछेंद्री पाल से मिलने चली गई और अपना निर्णय उन्हें बताया। उसकी दृढ़ इच्छा देखकर उन्होंने उसे पूरी मदद करने का फैसला लिया। उनकी सलाह और सहयोग से उसका प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ और जानती हो दुर्घटना के दो साल बाद ही वह एवरेस्ट पर पहुँच गई थी।

''यह कब की बात है दादी?

''अप्रैल २०११ में उसका पैर कटा था और २ साल बाद ही मई २०१३ में एवरेस्ट के शीर्ष पर पहुँचने वाली पहली दिव्यांग पर्वतारोही बन कर उसने इतिहास रच दिया था। उसके बाद भी उसने एशिया, युरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि कि कई दुर्गम पर्वत श्रंखलाओं पर भी सफलता पूर्वक चढ़ाई की। उसे बहुत पुरस्कार मिले। भारत सरकार ने उसे पद्मश्री से सम्मानित किया।

''दादी आपने उस साहसी महिला का नाम तो बताया ही नहीं?''

''हाँ बेटा उस साहसी महिला का नाम **अरुणिमा सिन्हा** है और वह इस समय करीब ३०-३१ वर्ष की होगी।

वाह! दादी यह तो मुझे कोई काल्पनिक परी-कथा सी लग रही है। उसके सामने मेरा दुख तो कुछ भी नहीं है। मेरा एक बायाँ हाथ ही कटा है, दायाँ हाथ तो सलामत है और मेरा लक्ष्य भी कोई बहुत मुश्किल नही है। अपनी शिक्षा पूरी करके मैं तो पेंटिंग के शौक को आगे बढ़ा कर उसी में कुछ करना चाहती हूँ।''

दादी ने प्यार से उसका माथा सहलाते हुए कहा- ''हाँ बेटा जीवन में कभी हताशा की शिकार नहीं होना और आत्मविश्वास बनाये रखना। तुम जो चाहती हो वह तुम्हें अवश्य मिलेगा।

• हैदराबाद (तेलंगाना)

छः अंगुल मुस्कान

- विष्णुप्रसाद चौहान

महिला - भैया सही रेट लगाओ, हम हमेशा यहीं से सामान ले जाते हैं।

दुकानदार - भगवान से डरो बहन जी, कल ही इस दुकान का उद्घाटन हुआ है।

*****

अस्पताल का एक कर्मचारी - क्या पेशेंट नंबर १३ को होश आ गया?

दूसरा कर्मचारी - क्या वो बेहोश था! मैंने तो उसका पोस्टमार्टम करवा दिया है।

*****

एक माँ अपने बच्चे का फोटो खिंचवाने के लिए फोटो स्टूडियो लेकर गई। फोटोग्राफर बच्चे को पुचकारते हुए - ''बेटा मेरी तरफ देखो। इस कैमरे से अभी कबूतर निकलेगा।''

बच्चा बोला- ''फोकस एडजस्ट कीजिए, पोट्रेड मोड यूज कीजिए। मैक्रो के साथ। हाई रेजोल्यूशन में फोटो आनी चाहिए। फेस बुक पर अपलोड करना है, वरना पैसे नहीं मिलेंगे। कह रहे हैं 'कबूतर' निकलेगा...। किसने डाला था कबूतर कैमरे में...?

फोटोग्राफर - बेटा कौनसे स्कूल में पढ़ते हो?

बच्चा - आंगनवाड़ी में।

*****

लड़की - तुम्हारा नाम क्या हैं?

लड़का - इंग्लिश में ब्लैक लॉयन

लड़की - और हिन्दी में

लड़का - कालूसिंह

*****

शिक्षक (छात्र से) - मानसून का मतलब क्या होता है?

छात्र - ना किसी की मान और न किसी की सुन।

• ढबला हरदू (म.प्र.)

वायलिन
की
कमाई
चित्रकथा: देवांशु वत्स
लाल बुझक्कड़ काका जब भी विदेश से आते, राम के लिए उपहार भी लाते...
यह रहा तुम्हारा उपहार राम बेटा!
अरे वाह!
काका, आपने पिछली बार जो वायलिन दिया था, उससे मुझे खूब पैसे मिल जाते हैं!
अरे वाह!
मतलब तुम इतना अच्छा बजाने लगे!
नहीं, वो बात नहीं है काका!
अच्छा तो फिर?
दरअसल, मेरे दादाजी...
... वायलिन नहीं बजाने के लिए मुझे पैसे देते है !!
!!

पुस्तक परिचय

मूल्य १००/-

गाँव चल कर आ गया

रेखा लोढ़ा 'स्मित' – बचपन की सुकोमल मनोभूमि पर संस्कारों के रंग सजाती ग्यारह रोचक बाल कहानियाँ।

प्रकाशक – बोधि प्रकाशन, सी–४६, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रीयल एरिया एक्सटेंशन, नाला रोड़, २२ गोदाम, जयपुर ३०२००६ (राज.)

मूल्य १००/-

सूरज की सर्दी

डॉ. मंजरी शुक्ला – मनोरंजक तत्व से भरपूर आधुनिक भावभूमि पर रचित पन्द्रह मनभावन बाल कहानियाँ

प्रकाशक – देवभूमि विचार मंच प्रकाशन, बी–ब्लाक, मंदाकिनी विहार, सहस्रधारा रोड़, देहरादून २४८००१ (उत्तराखण्ड)

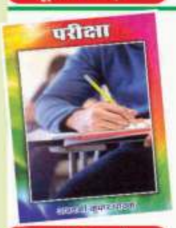

मूल्य १००/-

परीक्षा

अश्विनी कुमार पाठक – बाल एवं किशोर मनोविज्ञान की धरती पर मनोरंजन और प्रबोधन से भरपूर रुचिकर १३ बाल कहानियाँ।

प्रकाशक –पाथेय प्रकाशन, ११२, सराफा वार्ड, जबलपुर (म.प्र.)

मूल्य ५५/-

दादी दो बेसन के लड्डू

नीलम राकेश – प्रकृति सदैव ही साहित्य की प्रेरिका रही है बाल मन हो प्रकृति में और भी गहरे रमता है। प्रकृति से संवाद करती ऐसी ही २५ बाल कविताएँ।

प्रकाशक – दिशा इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, ८८ भुन्नातबा थाना, रखुपूरा, ग्रेटर नोएडा २०३२९३ (उ.प्र.)

मूल्य १५०/-

पुस्तक मित्र

डॉ. विनीता राहुरीकर – बालमन को समसामयिक समस्याओं के प्रति सचेत करती, समाधान खोजती, संवाद करती हुई ९ मनभाती बाल कहानियाँ।

प्रकाशक – संदर्भ प्रकाशन, जे–१५४, हर्षवर्द्धन नगर, भोपाल (म.प्र.)

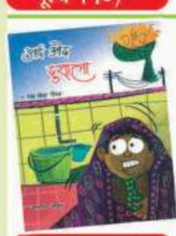

मूल्य १००/-

आई ओढ़ दुशाला

रेखा लोढ़ा 'स्मित' – बचपन की वाटिका में हजारों रंग के भाव पुष्प होते हैं, उन्हीं में से कुछ महकते भावों की २१ बाल कविताओं में मनोरंजक ढंग से प्रस्तुती।

प्रकाशक – बोधि प्रकाशन, सी–४६, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रीयल एरिया एक्सटेंशन, नाला रोड़, २२ गोदाम, जयपुर ३०२००६ (राज.)

यह देश है वीर जवानों का (८)

मेजर शैतान सिंह

'सवा लाख से एक लडाऊँ' का घोष आज भी हमारी नसों में अदम्य साहस भर देता है। गुरू गोविन्द सिंह जी ने यह कर दिखाया था। उनके बाद भी भारत वर्ष में ऐसी शौर्यमय परम्परा स्थापित रही। उसी परम्परा का एक शौर्य पृष्ठ लिखा था मेजर शैतान सिंह भाटी ने। जब १७ हजार फीट की ऊँचाई पर लद्दाख के चुशूल क्षेत्र में रेजांग–ला–दर्रे के पास राजस्थान की वीरमाटी के लाल मेजर शैतानसिंह ने अपनी कुमाऊँ रेजीमेंट के १२३ जवानों को २ हजार चीनी सैनिकों से भिड़ा दिया।

१७ नवम्बर १९६२ चीनी सैनिकों ने भारतीय चौकी पर भयंकर आक्रमण कर दिया था। यह वह दौर था जब अक्टूबर १९६२ से ही लद्दाख से अरुणाचल के नेफा तक चीनी आक्रमण भारतीय सेना के लिए दुस्साहस हो गया था। अक्साई चीन सीमा विवाद के रूप में इतिहास में दर्ज यह युद्ध मेजर शैतानसिंह के अतुल्य शौर्य की भी गाथा बना। अपनी चौकी बचाने वे कंपनी की पाँचों टुकड़ियों तक तूफानी वेग से पहुँच–पहुँच कर साहस बढ़ा रहे थे। दुश्मन की गोलियाँ उनके शरीर में धसती जा रहीं थी। दो जवान अपने घायल नायक की रक्षा हेतु उन्हें युद्ध स्थल से सुरक्षित ले जाने बढ़े तो मेजर ने उन्हें रोक दिया। अगले दिन १८ नवम्बर तक १२३ में से १०९ जवान अपने प्राण–पुष्प भारत माता को चढ़ा चुके और फिर भारतीय स्वातन्त्र्य का रक्षक यह पुजारी भी हाथों में बन्दूक लिये ही काल के सम्मुख समर्पित हो गया।

०१ सितम्बर १९२४ को जोधपुर राजस्थान में जन्मे मेजर शैतानसिंह १८ नवम्बर १९६२ को अपने अगले जन्मदिन की प्रतीक्षा भी न करते हुए अगला जन्म लेने चिरविदा ले गए।

मेजर न रहे पर शेष जवानों ने अपने घुटने न टेके अपनी चौकी अविजित रखी। बर्फ की चादर ओढ़े मेजर का शव तीन माह बाद प्राप्त हुआ। भारत ने उन्हें परमवीर चक्र से सम्मानित किया। धन्य है ऐसे नायक व उनके साथी वीर।

भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानुपर द्वारा

बाल साहित्यकारों का सम्मान

कानपुर। भारतीय बाल कल्याण संस्थान, कानपुर के ६१वें वार्षिक अधिवेशन में बाल साहित्य और बाल कल्याण से जुड़े छः विद्वानों को सम्मानित किया गया।

पांच हजार रु. का डॉ. राष्ट्रबंधु स्मृति बाल साहित्य सम्मान महाराष्ट्र की डॉ. बानो सरताज को दिया गया। लखनऊ के लायकराम मानव, वाराणसी के पवन कुमार वर्मा, बीकानेर की आशा शर्मा, कोटा के रघुराज सिंह कर्मयोगी और उत्तराखण्ड के विष्णु शास्त्री सरल को प्रशस्ति पत्र, प्रतीक चिन्ह, अंग वस्त्र और दो हजार एक सौ रु. की राशि सहित विविध स्मृति सम्मानों से सम्मानित किया गया। प्रतिभाशाली बच्चों को भी सम्मानित किया गया। बाल साहित्य पर संगोष्ठी हुई। संस्थान की स्मारिका का लोकार्पण भी हुआ।

समारोह में पूर्व विधायक भूधर नारायण सिंह, डॉ. राष्ट्रबंधु जी के सुपुत्र भारत भूषण त्रिपाठी, कवि चक्रधर शुक्ल, गणेश गुप्त सहित अनेक सभ्रांतजन उपस्थित रहे।

डॉ. राष्ट्रबंधु जी द्वारा संस्थापित इस संस्था से अब तक देश विदेश के एक हजार से अधिक लेखक सम्मानित हो चुके हैं।

गाथा वीर शिवाजी की (समापन कड़ी)

मृत्युंजय

राजाराम के विवाह के कुछ दिन बाद। शिवाजी महाराज को तीव्र ज्वर। वैद्य आये। नव–ज्वर (नया बुखार) समझकर चिकित्सा प्रारम्भ की, लेकिन वह तो कालज्वर था, जो इस धराधाम की एक महाविभूति की स्वर्ग–द्वार पर देवताओं द्वारा आतुर अगवानी के लिए संदेश लेकर आया था।

ज्वर बढ़ता ही गया। तीव्र उत्ताप। फिर भी महाराज के मन और मस्तिष्क पूर्ण स्वस्थ बने हुए थे। उन्हें अपने अन्तिम समय का आभास हो गया था। चिकित्सकों को उपचार के लिए मना कर दिया।

अश्रुपूरित स्वजनों को आवश्यक निर्देश दिये और विदा किया। फिर अपने जीवनपथ के गाढे साथियों को बुला लिया। नीलोपन्त प्रह्लाद नीरोजी, गंगाधर जनार्दन, आबाजी, हीरोजी, सूर्याजी मालसुरे और अन्य सभी आये। सभी ने देखा– अपने अग्रणी महावीर को काल से संग्राम के समय भी अपराजेय। फिर भी, साथियों की आँखें बिछोह की वेला में उमड़ रही थी आँसू टप–टप चू पड़े।

कालजयी शिवराज को यह अच्छा नहीं लगा। बोले– ''अरे! वीरव्रत की राह पर चलने वालों के लिए यह रुदन कैसा? तानाजी, बाजीप्रभु आदि साथियों का बलिदान देकर क्या हम रोये थे? फिर आज ये आँसू क्यों? स्वराज्य की आकांक्षा लेकर जीने वालों के लिए मृत्यु भी मुक्ति मार्ग का ही एक पड़ाव मात्र है।''

साथी चिन्तामग्न खड़े रहे, आँसुओं को पीकर। महाराज के उत्तप्त भाल पर सभी की दृष्टि टिकी है। उनके होंठ स्फुरित हो रहे हैं। शायद कुछ निर्देश देना चाहते हैं। साथियों ने अंजलि बाँध ली, बोले– ''हमारे लिए महाराज! क्या निर्देश दे रहे हैं?''

''आप सभी स्वराज्य के स्तम्भ हैं। आपके लिए निर्देश की कोई आवश्यकता नहीं है। लेकिन स्वराज्य के भविष्य के विषय में चिन्तित हूँ। युवराज शम्भाजी की अस्थिर मति इस स्वराज्य के संरक्षण और विकास में बहुत बड़ी बाधा है। उसके दोषपूर्ण व्यवहार से मित्र रुष्ट होंगे और शत्रुओं को आक्रमण का अवसर मिलेगा। मुगल बादशाह औरंगजेब तो ऐसे ही मौके ढूंढता ही रहता है। आप सभी शम्भा के दुर्व्यवहार को क्षमा करते हुए, सभी बातों के बीच स्वराज्य की रक्षा के लिए आजीवन सचेष्ट रहें।'' महाराज ने कहा।

''हम प्रतिज्ञा करते हैं कि महाराज के निर्देश का पूरी तरह पालन करेंगे, सभी ने एक स्वर में वचन दिया।

''लेकिन स्वराज्य का संकट बहुत दिन नहीं रहेगा। राजाराम के छत्रपति बनने पर आप सभी पुनः उसका उत्कर्ष और विकास करने में समर्थ हो सकेंगे।''

सभी साथी आश्चर्य में थे। महाराज यह भविष्य देख रहे हैं या तीव्र ज्वर के कारण प्रलाप में कह रहे है। लेकिन वे अपने अग्रनायक को अच्छी तरह पहचानते थे, शीघ्र ही वे समझ गये, हिन्दवी स्वराज्य के संस्थापक शिवाजी साधारण जन की तरह मृत्यु के समय बीते दिनों की याद और स्वजनों

के लिए मोह में पड़ने वाले नहीं थे। जिस वीर ने अपनी आँखों में संजोए एक सपने को साकार करने में सारा जीवन लगा दिया, वह भविष्य को भी साक्षात् अपनी आँखों से देख रहा है– निरासक्त निर्लिप्त!

महाराज ने साथियों पर एक स्नेहसिक्त दृष्टि डाली और अन्तिम वाक्य कहे– ''दुःख न करो। यह ऐसा संसार है, जहाँ मृत्यु अनिवार्य है। इस दुनिया में जो पैदा हुआ है, उसे जाना भी होगा। आप सभी अपने मन को शांत करें। अब आप लोग जा सकते हैं। मैं अब ध्यान करूँगा।''

साथियों ने विवश हो प्रकोष्ठ के द्वार की ओर कदम बढ़ाये और जाते–जाते अपने प्रिय महाराज को अन्तिम क्षणों में निर्निमेष हो देखा– महाराज रोग शय्या से उठकर नीचे आ गये थे।

व्याकुल स्वजन द्वार की ओर बढ़ आये। महाराज ने उन्हें अन्दर आने से रोक दिया। फिर गंगाजल से स्नान किया। यज्ञवेदी की भस्म देह में रमा ली। वह चिरगृहस्थ–चिरसंन्यासी आज संसार के सभी बन्धनों को स्वयं ही छोड़ कर जा रहा हैं। अन्तिम क्षणों में संन्यास की यह अनोखी विधि उसके सिवा और कौन जानता है।

महाराज कुश की आसनी पर पद्मासन से बैठ गये। मन सभी आवरणों को भेद कर अपने कारण में मिल गया। योग सोपानों पर चढ़कर समाधि में लीन होते ही प्राण ब्रह्मरन्ध्र को फोड़ कर मुक्त हो गये।

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा (शनिवार, ३ अप्रैल, १६८०)। पूर्ण चंद्र रात भर अपनी किरणें धरती को बाँटता रहा मानो शिवराज वीर की इस गाथा को मुखरित कर रहा हो–

हाँ, अब यह प्रतिपदा की वर्धिष्णु चन्द्ररेखा पूर्णिमा का चन्द्रमा बन कर भारत के अंधकारपूर्ण गगन को चमका गयी थी।

महाराष्ट्र के घर–घर में रुदन था और सम्पूर्ण राष्ट्र भारत के आबाल वृद्ध पूर्णचन्द्र में लीन उस महाज्योति को पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धा से शीश झुका रहे थे।

(समाप्त)

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

एक दिन श्री भगवतीचरण वर्मा छुरी–कांटे से रसगुल्ले खाने का प्रयत्न कर रहे थे। रसगुल्ला प्रेमी डॉ.अमरनाथ झा से न रहा गया और उन्होंने कहा, ''भगवती! रसगुल्ले वैसे नहीं, ऐसे खाए जाते '' और उन्होंने प्लेट में रखे रसगुल्लों को हाथ से उठाकर मुँह में रखना शुरु किया और वर्मा जी के आवक् होकर देखते–देखते सातों रसगुल्ले उदरस्थ कर गए।

*****

रूस के भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री खुश्चेव बड़े ही विनोदप्रिय व्यक्ति थे। और उनकी यह विनोदप्रियता काफी प्रसिद्ध भी है। एक बार अक्टूबर क्रांति के उपलक्ष्य में पार्टी हो रही थी। उसमें अन्य देशों के राजदूतों के साथ अमरीका के भी राजदूत उपस्थित थे। श्री खुश्चेव अमरीकी राजदूत से बात करते–करते उद्यान के एक कोने में पहुँच गए। वहाँ एक लता की टहनी में बड़ा सुन्दर फूल खिला हुआ था। श्री ख्रुश्चेव को वह फूल भाया और उन्होंने उसे तोड़ने का प्रयास किया। पर उनका हाथ उस तक नहीं पहुँच पाया। अमरीकी राजदूत जो कद में श्री ख्रुश्चेव से लम्बे थे, फूल तोड़ते हुए बोले, ''मि.ख्रुश्चेव, लीजिए मैं तोड़ देता हूँ, क्योंकि मैं आपसे ऊँचा हूँ।''

''आप भूल रहे हैं मि. राजदूत! आप मुझसे ऊँचे नहीं, लम्बे हैं।'' ख्रुश्चेव ने कहा।

दाने दाने की एक कहानी

कहानी

समीर गांगुली

धनीराम था एक मस्त पंसारी।

अगर माप–तौल में डंडी मारता था तो बच्चों को रूंगा (थोड़ा ज्यादा) भी देता था।

उसकी दुकान में घरेलु उपयोग का सारा सामान बिकता था। नून, तेल, गुड़ से लेकर दाल–चावल–गेहूँ और झाड़ू, दातुन तक।

लाला अकेला सारी दुकान संभालता था। कंजूस था इसलिए नौकर चाकर नहीं रखता था।

सुबह आठ बजे दुकान खुलती थी और रात को आठ बजे बंद होती थी।

दोपहर एक बजे लाला धनीराम के घर से चार डिब्बों वाले टिफिन कैरियर में खाना आता पूरी, सब्जी, दाल, चावल, अचार और छाछ।

लाला गद्दी पर चौकी लगाता, डिब्बा खोलता। बड़े चाव से खाना खाता। फिर तसल्ली से एक लंबी डकार लेता और डिब्बा समेट कर, चश्मा माथे पर चढाकर, मुँह खोलकर, दुकान को खुला रखकर ही सो जाता।

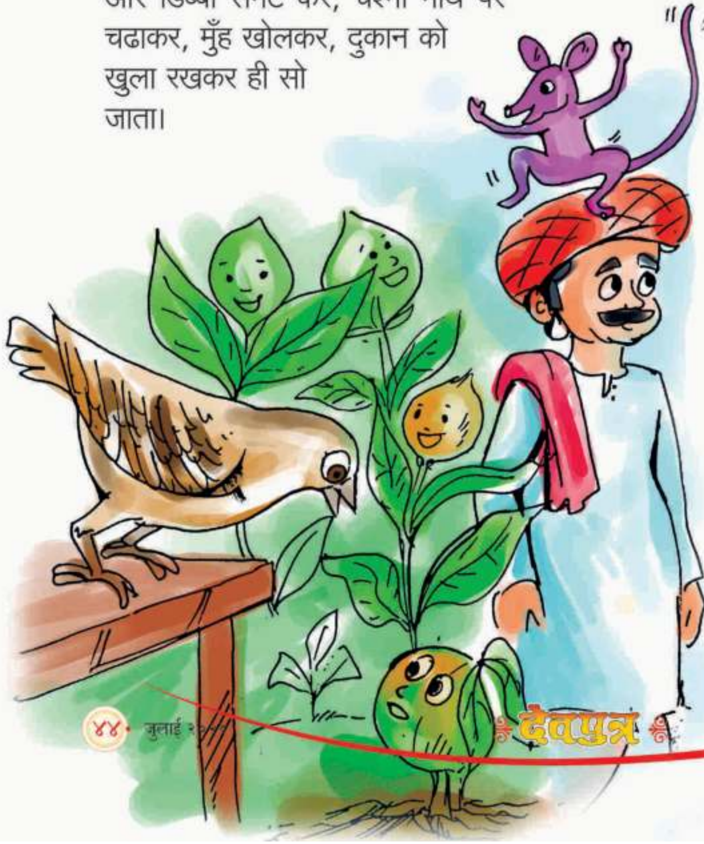

हाँ सोने के पहले एक पुरानी स्लेट पर चॉक से लिखता– 'दुकान बन्द है।'

लाला के खर्राटे शुरु करते ही एक दूसरी दुनिया शुरु हो जाती।

सबसे पहले मोटे कांच वाला चश्मा पहने एक नटखट लड़की दबे पाँव आती। चॉक उठाती और लाला की स्लेट पर तीन अक्षर और जोड़ती, जिससे लाला का लिखा यूं बन जाता– 'दुकानदार बंदर है'

और भाग जाती।

उसके बाद एक मोटा चूहा प्रकट होता और सामान के बोरे–डिब्बों पर अपनी पूँछ फटकारते हुए बोलता–

ये दुकान मेरी है,
जो चाहे खाऊंगा,
जो चाहे बेचूंगा
मगर पहले लाला का बचा खाना खाऊँगा।

यह कहकर वह लाला के खाने के डिब्बे की तलाशी लेने लगता।

उसकी बात सुनकर बोरों में बैठे–लेटे दाने–मटर, गेहूँ, धनिया, मिर्च, आलू, प्याज, बादाम, अखरोट सब हो–हो कर हँस पड़ते।

तभी एक गौरैया फुर्र–फुर्र करके आती।

एक मेज पर पैर टिकाती और सबको डांट कर जोर से बोलती–''चुप्प।''

तुरंत सन्नाटा छा जाता।

गौरैया अपने पंख फुलाकर, डरावनी दिखने की कोशिश करते हुए फिर बोलती– ''खा जाऊँगी! कच्चा!! और साथ ही साथ, बाजरे की बोरी में चोंच मारकर चार बाजरे निगल जाती।

दानों की दुनिया में हाहाकार मच जाता। सब के सब मटर के दाने की तरफ देखने लगते।

मटर का दाना, खड़ा होकर दया का गीत गाने लगता।

उड़द, मटकी और अरहर के दाने एक साथ विलाप राग छेड़ते।

तब गौरैया परेशान होकर पूछती– ''मैंने, ऐसा क्या कहा, कि तुम सब रोने लगे। ये तो सरासर ज्यादती है।''

ऐसा हर रोज होता। दाने चुप हो जाते और गौरैया चुन–चुन कर दाने चुगती। कुछ दाने पोटली में भरती और लाला के जागने से पहले ही फुर्र से उड़ जाती।

मगर एक दिन ऐसा नहीं हुआ।

गौरैया ने अपना संवाद दोहराया और चने का दाना तन कर खड़ा हो गया और पूरी आवाज में बोला– ''ज्यादती हमारी नहीं तुम्हारी है?''

गौरैया ने चौंक कर पूछा– ''क्या कहा?''

बाकी सभी दानों ने एक साथ कहा– ''सच कहा।''

इससे चने के दाने का हौंसला बढ़ गया, वह बोला– ''तुम हमेशा मनमनी करती हो, रोज हमें खाती फिरती हो, कभी तो बदला चुकाने की सोचो। हमारी आजादी की सोचो। हमारा नामोनिशान मिटने से बचाओ।''

गौरैया चकराई ''मगर कैसे?''

सब चुप हो गए। तभी लाला की बची जलेबी खाकर खुश हुआ चूहा बोला, ''तरीका मैं बताता हूँ। हर बोरी से एक दो दाने ले जाओ और बाहर नदी किनारे मिट्टी में बो दो।

जल्दी ही बरसात शुरु हो जाएगी। ये सब नए रूप में जी उठेंगे।''

गौरैया सर हिलाकर बोली, ''तरकीब तो अच्छी है, आज से ही ऐसा प्रारम्भ करती हूँ।''

और इस तरह गौरैया हर बोरी, हर डिब्बे से एक दो दाने चुन कर उन्हें नदी किनारे की जमीन पर दबाने लगी।

कई दिनों के बाद जब काम पूरा होने को था, एक बारीक सा दाना, जो कि उस दुकान का सबसे छोटा और सबसे बदरंग दाना था, गौरैया के पास आकर बोला, ''मुझे भी ले चलो।''

गौरैया उसे देख हँस कर बोली, ''मगर तुम हो कौन?''

वह दाना बोला, ''मैं हूँ अनजाना, मुझे अपने नाम, जाति और गुण का कोई पता नहीं।''

यह सुनकर बाकी दाने खिलखिलाकर हँस पड़े। लगे उसका मजाक उड़ाने, मगर गौरैया को उस पर दया आ गई, वह बोली, ''ठीक है चलो तुम्हें भी ले जाती हूँ।''

गौरैया की बात सुनकर और तीन बेढंगे, बदसूरत दाने भी आ गए और बोले, ''यहाँ हमसे ना कोई बोलता है, न खेलता है, हमें भी ले चलो।''

गौरैया बोली, ''चलो तुम भी।''

फिर वह दानों की तरफ मुड़कर बोली, ''मैं जा रही हूँ अपनी बहन के घर रहने उसकी आँखों का आपरेशन हुआ हैं। उसका घर संभालने। लौटूंगी तीन महीने बाद। तब फिर तुमसे होगी मुलाकात। यह कहकर गौरैया फुर्र से उड़ गई।

फिर आए बरसात के दिन। झमाझम पानी बरसा। मौसम बदला। हवा चलने लगी। ठंड बढ़ने लगी। लाला लंबा कोट पहन कर आने लगा।

और कई महिनों के बाद गौरैया के फिर से दर्शन हुए।

उसी समय दोपहर में जब लाला खर्राटे भर रहा था।

गौरैया एक मेज पर आ कर बोली, ''खुशखबरी लाई हूँ। चने, मटर, मूंग, अरहर, धनिया, मिर्च सबने नया जन्म लिया है। हरे–हरे सुंदर पौधों के रूप में। जब हवा चलती है तो झूमते हैं। वे मिट्टी से पानी, खाद चूस कर बड़े हो रहे हैं और बहुत खुश हैं। वे पत्ते हिला–हिला कर तुम्हें धन्यवाद कहते हैं। कुछ दिनों बाद उनमें फूल खिलेंगे। फिर फलियाँ आएंगी। उनमे नए दाने भरेंगे और वे और बढ़ेंगे। फैलेंगे'' सिर्फ कोने में पड़ा एक दाना उदास पड़ा रहा।

गौरैया उसकी तरफ मुड़कर बोली, ''अरे अनजाना भाई! अब उदास मत रहो। तुम्हारी पहचान हो गई है। तुम्हारा भाई अब बरगद का पौधा बन गया है। वह तेजी से बढ़ता जा रहा है। बड़े–बड़े पत्ते और मोटी–मोटी शाखाएँ निकल रही है।''

चने का दाना तैश में आकर बोला, ''ऐसा कैसे, हमारे सौवें हिस्से जितने, काले बदरंग दाने के अंदर इतना बड़ा वृक्ष कैसे?''

गौरैया मुस्कराकर बोली, ''यही तुम सब के लिए सीख है। जिसे तुमने हमेशा अनदेखा किया वह अंदर से कितना विशाल हो सकता है। याद रखो, बरगद केवल कद–काठी में ही विशाल नहीं होता है, बल्कि दिल से भी बहुत उदार होता है।

वह अनेक पक्षियों, पशुओं को आश्रय देता है।

फल देता है। हवा को शुद्ध करता है।

छाँह देता है और हजार–हजार वर्ष तक जिंदा रहता है।''

यह सुनकर चने का दाना अपनी जगह से उठा और आगे बढ़कर अनजाना के भाई को गले से लगा लिया।

यह देखकर सभी दानों के आँखों से आंसू आ गए और सब एक सुर में खुशी का गीत गाने लगे। तभी सबने देखा, चूहा लाला के सिर पर खड़े होकर ठुमक–ठुमक कर नाच रहा है।

• अंधेरी पूर्व, मुंबई (महा.)

मेला का

कविता

भानुप्रताप सिंह

भीड़-भड़क्का, हल्ला-गुल्ला,
ठेलम-ठेला मेला का।
टेन्ट, रावटी, सर्कस, झूला,
तना झमेला मेला का।।

पानी पूरी, चाट, पकौड़ी,
सजा है ठेला मेला का।
छल्ला से किस्मत अजमाओ,
भाग्य का खेला मेला का।।

छोटा-बड़ा माल दस रुपिया,
खूब बिकेगा मेला का।
बर्फ के गोलों से, कुल्फी से,
स्वाद बढ़ेगा मेला का।।

छोटे-बड़े सभी बच्चों में,
रंग चढ़ेगा मेला का।
सूरज जी के ढलते ही,
अस्तित्व मिटेगा मेला का।।

• चकपैगम्बरपुर (उ.प्र.)

एक ही बात
चित्रकथा-
कंजूस सेठ अन्ना ने अपने सारे धन को मटके में डालकर जमीन में गाड़ रखा था..
वह हर रात चोरी-छिपे उसे खोदकर देखता. एक बार उसके नौकर ने उसे ऐसा करते देख लिया-
मौका पाकर उसने सारा धन चुराया और भाग गया-
कंजूस अन्ना खूब रोया-
..हाय मेरा पैसा...!
पड़ोसी को जब पता चला उसने अन्ना से कहा-
रोते क्यों हो अन्ना, तुम उस धन का उपयोग तो करते नहीं थे बस देखते ही थे.
..अब उस खाली मटके को देखने जाते रहा करो, तुम्हारे लिए यह एक ही बात होगी..

सुंदर रंग भरो

• चांद मो. घोसी

चित्र बनाओ • राजेश गुजर

बच्चो, केकड़े का चित्र

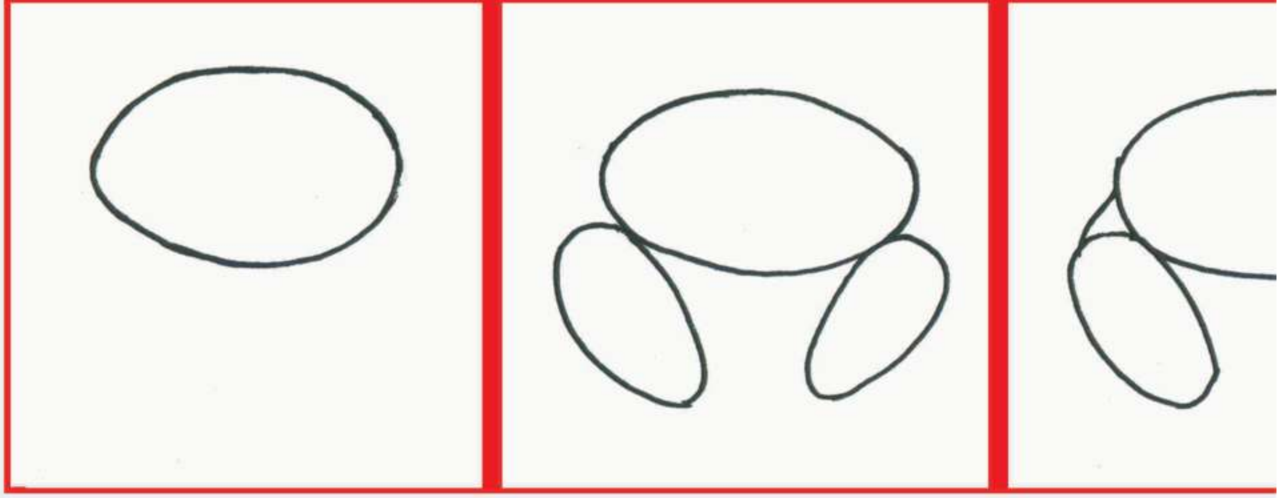

बंदर मामा का कम्प्यूटर

कविता

डॉ. वेदमित्र शुक्ला

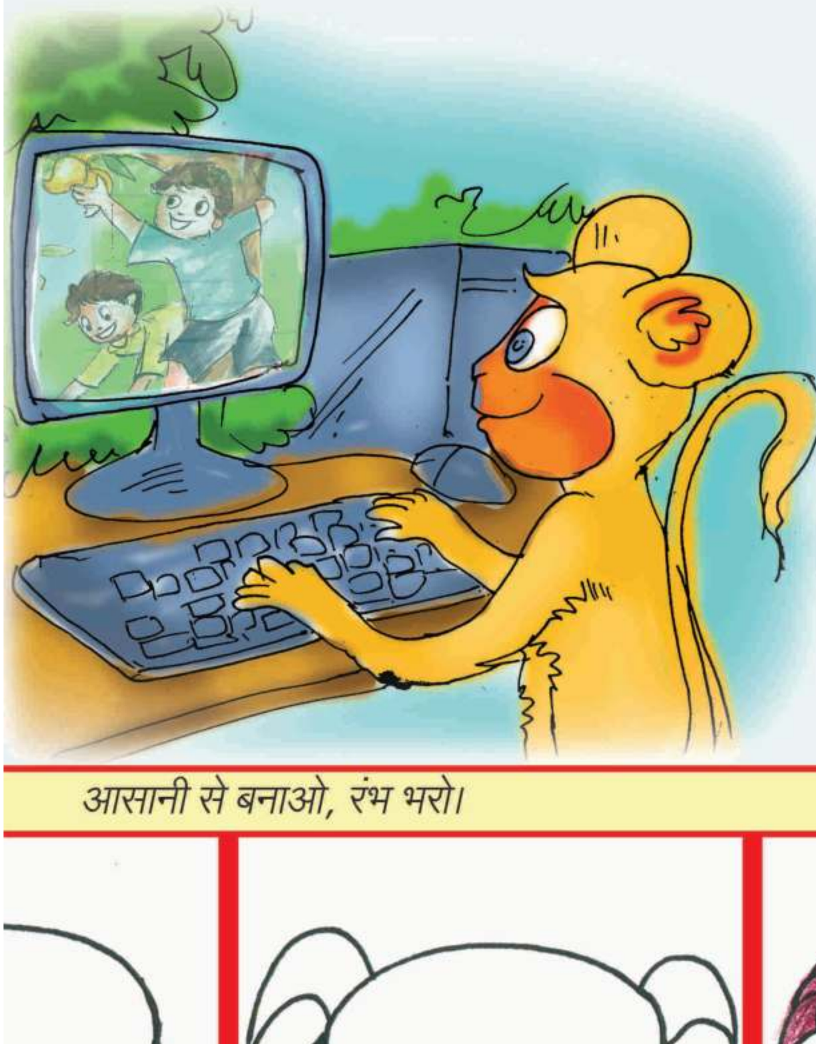

बन्दर मामा लेकर आये
एक नया कम्प्यूटर,
इन्टरनेट भी लगवाया
कम्प्यूटर के अन्दर।
खटपट-खटपट टाइप करके
सबको भेजें मेल,
तरह-तरह के विडियोगेम
खेलें ढेरों खेल।
छोड़ दिया पढ़ना अखबार
पढ़ते अब ई-पेपर,
पेड़ बचायेंगे जंगल के
कागज खूब बचाकर।
बन्दर मामा का कम्प्यूटर
जब से जंगल आया,
जंगल में मंगल ही मंगल
सभी ओर है छाया।

• नई दिल्ली

आसानी से बनाओ, रंग भरो।

खुशियों की लड़ी

कविता

रावेन्द्र कुमार 'रवि'

खेल-खेलकर साथ हमारे,
अब तो बिल्लो बड़ी हो गई।

कभी गोद में चढ़े हमारी,
कभी फर्श पर दौड़ लगाती।
घर-भर में यह फिरे फुदकती,
नई-नई है चाल दिखाती।
आज मजा आया जब बिल्लो,
दो पैरों पर खड़ी हो गई।

चिड़ियों की निगरानी करती,
उन्हें देखने छत पर जाती।
छत से सीधे कूद पेड़ पर,
सरक-सरककर नीचे आती।
नए-नए करतब दिखलाकर,
जादू की यह छड़ी हो गई।

जब यह पा जाती बाँसुरिया,
बाँसुरिया यह खूब बजाती।
गमलों के पौधों के नीचे,
अपनी झाँकी खूब सजाती।
इसके साथ खेलते-हँसते,
मस्तानी हर घड़ी हो गई।

आँगन पर जो जाल पड़ा है,
तड़प रही थी उसमें लटकी।
दो सरियों के बीच जाल में,
गरदन जो थी इसकी अटकी।
इसे छुड़ाकर जब पुचकारा,
यह खुशियों की लड़ी हो गई।

• खटीमा (उत्तराखण्ड)

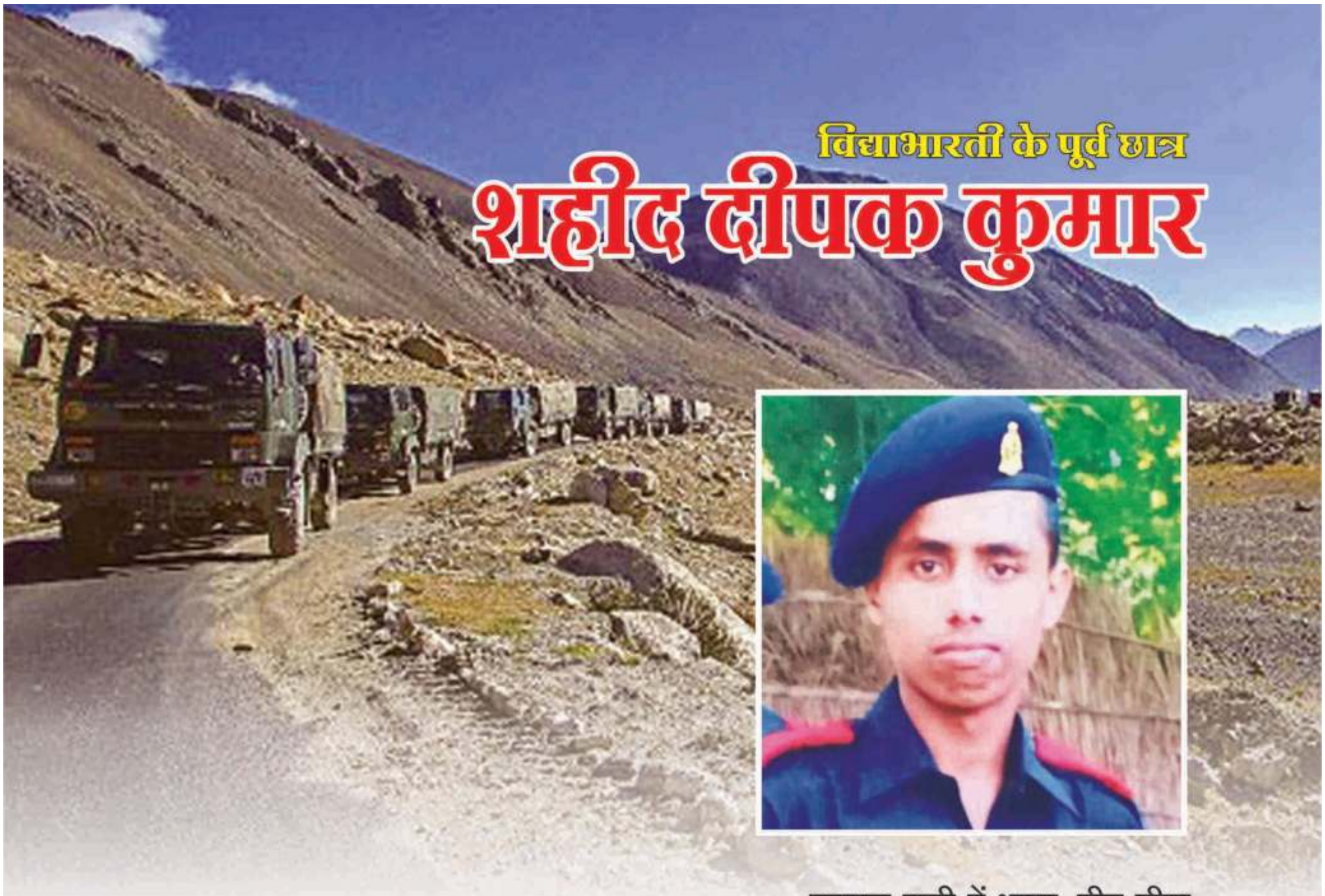

विद्याभारती के पूर्व छात्र

शहीद दीपक कुमार

गलवान घाटी के वीर सपूत

गलवान घाटी में भारत-चीन सीमा पर हुए संघर्ष में विद्याभारती के पूर्व छात्र मध्य प्रदेश के रीवा जिले के मनिकवार और उमरिया के राजेन्द्र नगर विद्यालय में अध्ययनरत रहे है। सीमा पार शत्रुओं का पराभव करते हुए बलिदान हुए शहीद दीपक कुमार ने सरस्वती शिशु मंदिर के संस्कारों की सार्थकता का प्रेरक प्रमाण दिया। शहीद दीपक कुमार का ६ माह पूर्व ही विवाह हुआ था। वे १४ फरवरी को ही अपनी छुट्टियाँ समाप्त कर सीमा पर आ डटे थे। विद्या भारती के इस वीर सपूत पर हमें अत्यंत गर्व और अभिमान है।

आइए, हम सभी वीर बलिदानियों को प्रणाम करते हुए चीन के सभी प्रकार के बहिष्कार का संकल्प लें। यही इन वीर बलिदानियों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/०६/२०२०
प्रेषण तिथि ३०/०६/२०२०
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क 180/-

आजीवन शुल्क 1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : **www.devputra.com**

देवपुत्र अब **Jio Net** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना